।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

वेदलक्षणा

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

मई 2026

वर्ष: 03 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक: 02

हे धरती–पुत्रों! हे मेरे प्रिय कृषक वंशजों!

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

हे मेरे प्रिय भाग्यविधाता! मैं समस्त गोवंश की आदि–जननी 'सुरभि' गोमाता तुम्हें आज कुछ कहना चाहती हूँ। मैं आदिशक्ति सुरभि हूँ, मेरा गोवंश सदियों से तुम्हारे आंगन की शोभा और तुम्हारे परिवार का अटूट हिस्सा रहा है। आज जब मैं बदलते हुए परिवेश को देखती हूँ, मेरा वंश भूखा–प्यासा तुम्हारे आंगन और खेतों की बजाय सड़कों पर और शहरों की गंदी गलियों में अपने पेट की अग्नि शांत करने के लिये कूड़ा–करकट और प्लास्टिक खाने को मजबूर होता है तो मेरा मातृत्व भाव तुम्हें कुछ याद दिलाने और समझाने के लिए व्याकुल हो उठता है।

मेरे प्यारों, तुम भारत की आत्मा हो और तुम्हारी समृद्धि ही इस देश की नींव है। लेकिन आज विकास की अंधी दौड़ में तुम जिस रसायन–युग में फंस गए हो, उसने न केवल तुम्हारी मिट्टी को बीमार किया है, बल्कि तुम्हारे स्वास्थ्य और स्वावलंबन पर भी प्रहार किया है। तुम बाज़ारों से खाद और बीज खरीदने के लिए कर्ज के बोझ तले दब रहे हो, जबकि तुम्हारी इस पीड़ा का समाधान सदैव से तुम्हारे ही द्वार पर, मेरे चरणों में मौजूद रहा है।

मेरी वंश गोमाता केवल दूध देने वाली एक इकाई नहीं है वह तुम्हारे खेतों के लिए अमृत का भंडार हूँ। मेरे वंश का गोमय (गोबर) मिट्टी के लिए वह उत्तम आहार है जो उसे मरी हुई को पुनर्जीवित कर सकता है, और गौमूत्र उन कीटों का काल है जो तुम्हारी फसल को नुकसान पहुँचाते हैं। जब तुम गो–आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाओगे, तो तुम्हारी लागत शून्य हो जाएगी और तुम्हारी फसल विष नहीं बल्कि प्रसाद बन जाएगी।

याद रखो, जब तक मेरा वंश तुम्हारे परिवार का हिस्सा रहेगा, तब तक तुम कभी दरिद्र नहीं हो सकते। मेरे गोवंश की सेवा तुम्हें केवल आर्थिक लाभ नहीं, बल्कि वह मानसिक शांति और संतोष देगी जो किसी बैंक बैलेंस में नहीं है। आज संकल्प लो कि तुम अपनी धरती माँ को रसायनों से मुक्त करोगे। तुम फिर से वही पुरातन और वैज्ञानिक मार्ग चुनोगे जहाँ गौ और किसान एक–दूसरे के पूरक थे।

हे धरती पुत्रों! गोमाता के दूध से अपने बच्चों को पुष्ट करो, पंचगव्य से अपनी मिट्टी को उर्वर बनाओ और अपनी मेहनत से इस धरा को फिर से सुजलाम–सुफलाम बनाओ। मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे हल और तुम्हारी मेहनत के साथ है। उठो मेरे पुत्रों! स्वदेशी और स्वावलंबन का नया अध्याय लिखो। तुम्हारी समृद्धि में ही मेरे वंश का कल्याण है और गोवंश संरक्षण में ही तुम्हारी प्रगति है। किसान खेती करता है और मेरे वंश से विहीन खेत है तो वह अपराधी है। पुत्रों! इस बात को समझो कि तुम्हारे द्वारा पैदा किये गये चारे के एक–एक तिनके पर मेरे गोवंश का अधिकार है, फसल में पहले चारा उगता है, दाना बाद में आता है। इसलिये चारा को जलाकर या अन्य किसी तरह नष्ट करना गोहत्या के समान है। इस अपराध से सदैव मुक्त रहना।

एक बार पुनः आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभाशीर्वाद।

तुम्हारी प्यारी मां सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:3

कामधेनु-कल्याण

अंक:2

वैशाख मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2083 रा.शाः 1948 मई –2026

1.	**गोसेवा के लिये भगवान अवतार लेते हैं** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री	04
2.	**प्रार्थना क्या है** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री	07
3.	**श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री	10
4.	**श्री रामचरितमानस में गोमहिमा** – संकलित	13
5.	**ठाकुरजी कब आओगे** – भगवत प्रेरणा से	14
6.	**श्री मदभागवत कथा** – पूज्य द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	17
7.	**श्री राम कथा** – पूज्य आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	20
8.	**श्री शिव महापुराण कथा** – पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज	23
9.	**राजा जनक को नरक के दर्शन क्यों हुए** – संकलित	26
10.	**गोदान की विधि** – संकलित	28
11.	**सनातन धर्म** – अम्बा लाल सुथार, सम्पादक	30
12.	**गोमय और उससे बनने वाली खादें**– अम्बा लाल सुथार, सम्पादक	32
13.	**संस्था समाचार** – मार्च माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण	34

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

गोसेवा के लिये भगवान अवतार लेते हैं

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

(सुरभि संसद दिनांक 16.01.2026 में प्रदान किया गया आशीर्वाद)

.... पिछले अंक से आगे

हमारी धरती पर वेदलक्षणा गोमाता की मंगलमय उपस्थिति समष्टि और व्यष्टि जीवन को सुरक्षित रखती है। आज दुनिया में ऐसे विनाशकारी अस्त्र-शस्त्र आदि हैं और वे कभी फटेंगे-टूटेंगे, छोड़ेंगे-मारेंगे। उनका विष फैलेगा उस समय कोई सुरक्षा करने वाला नहीं है। मानव जाति से जीव जगत की रक्षा ऐसी विकट परिस्थिति में गोमाता ही करेगी। ऐसी अनुपम गोमाता की महिमा का प्रमाणित ज्ञान विश्व मानव जाति के नि:श्रयस और अभ्युदय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय इतिहास और आर्ष ग्रंथों के अनुसार इसमें मानवता की सेवा और सनातन धर्म की रक्षा समाहित है। अगर हम वेदलक्षणा गोमाता से संबंधित जो ज्ञान है, उनकी जो महिमा है उसे हम धरती पर स्थापित करते हैं तो इससे मानवता की तो बहुत बड़ी सेवा होगी ही होगी और सनातन धर्म की रक्षा भी उसी से होगी क्योंकि सनातन धर्म की रक्षा का मूल आधार गाय है।

अत: वेदलक्षणा गोमाता की सत्ता, महत्ता, उपादेयता, आवश्यकता और उपयोगिता को धरती पर प्रकाशित और प्रस्थापित करने के लिए आज सुरभि संसद की बैठक में हम लोग निम्नलिखित योजनाओं को क्रियान्वित करने का संकल्प रखते हैं:-

उसमें सबसे पहला संकल्प है- जो अभी आप दर्शन करके आए हैं श्री गोपाल जी के, उनका गो-गोपाल कॉरिडोर जी बनाना। गोपाल जी के बारे में तो आप जानते ही हैं। यह सार्वजनिक रूप से कहने की बात नहीं है, पर बार-बार हमें पूछते हैं। आज सुरभि सांसद है तो दो मिनिट में अपना वो भाव बता दें कि शायद अज्ञात काल में जब हम निकले तो एक-आध वर्ष के बाद में 18 साल से भी कम आयु रही होगी यमुनाजी के किनारे चौगानगढ़ एक जगह है गोकुलजी के पास में वहाँ हम रहते थे। गोकुल जी के पास में वहाँ रहते समय हमें एक साथी, सखा मिले जो गोप परिवार से थे। उस समय जब मिले तो गोप परिवार से हैं ऐसा उनका परिचय था और कई महीनो तक वे हमारे साथ रहे। हमें दूध-छाछ आदि पिलाते अपनी गायों में ले जाते। गोकुल और रावल के बीच में उनकी गायों के गोष्ठ थे। रावल राधाजी की जन्म भूमि है और गोकुल गोपाल की जगह है। उसके बीच में जितनी जगह है वहाँ एक चंद्रावली सखी का स्थान है बाकी पूरा खुला पड़ा था कोई ग्राम नहीं था। बहुत लंबे समय तक वे हमारे साथ रहे। बाद में हमें ज्ञात हुआ कि वे 16 महीना साथ रहे।

बहुत संक्षेप में हम अपनी बात कह रहे हैं। एक दिन शाम के समय में उनका हाथ हमारे हाथ में था, हम गोचर्चा कर रहे थे कि अचानक वे हमें छोड़कर ऊपर उठ गए और आकाश में चले गए। प्राणों को खींच ले गए। व्याकुलता बढ़ी, अग्नि हृदय में धधकी, अंदर दाह उठी और जोर से चिल्लाये। हमारे आसपास में दो व्यक्ति सोए थे- सूरज माली और ब्रह्मानंद वैद्य जी। सूरज तो अभी जीवित है ब्रह्मानंद पधार गए। दोनों जगे और भाग कर हमारे पास आए। वहाँ लोग हमको कोई पागल युवक की तरह देखते थे, पर कुछ गुणीजन ऐसा कहते थे कि इनके ऊपर भगवान की कृपा हुई है तो इनको कोई परेशान मत करना। इस कारण हमको कोई परेशान नहीं करते थे। हमारा ध्यान रखते थे-वस्त्र से, आवास से, भोजन से। वहाँ के पंडा लोग जो सबसे लेते हैं वे भी हमारा ध्यान रखते थे। हम प्रतिदिन मंगला के

दर्शन करने गोकुल में जाते गोकुलनाथ जी के। जब वे इस तरह से निकले तो प्राण साथ में खींच के ले गये। हम चिल्लाए तो वे दोनों आए, फिर हमें पसीना आया कंपन आया हम बेहोश हो गए। बहुत देर तक बेहोश पड़े रहे। फिर जगे तो बहुत दाह हुआ तो हमने कहा हम हिमालय जाएंगे बर्फ में, हमको बहुत जलन हो रही है।

तो वहाँ से चलकर, बहुत बड़ी कहानी है, (कहानी विस्तार से कामधेनु कल्याण में धारावाहिक के रूप में चल रहे लेख- 'ठाकुरजी कब आओगे' में पढ़ सकते हैं) पता नहीं कैसे-कैसे करके हम हिमालय पहुँच गए। जो हमारी अध्यात्मिक भूमि है माँ अनसूया, भगवान दत्त के अवतार की भूमि है मण्डला के ऊपर वहाँ गये और वहाँ एक संत जो हमसे आयु में अधिक थे उन्होंने हमारा ध्यान रखा। ढाई वर्ष तक गुफा में हमने वहाँ निवास किया। ढाई वर्ष में सर्दी, गर्मी, बारिश तीनों तरह के मौसम थे। दूध लेते थे जो माताजी के मंदिर से आता था और सप्ताह में एक दिन एक अध्यापक थे भगवती प्रसाद वाजपेई नाम के वे फल पहुँचाते थे।

ढाई वर्ष बाद वहाँ से उतरकर हम आये 1987-88 में तब यहाँ राजस्थान में दुष्काल था तो गोपेश्वर जी आगे मिले रामकुमार जी जालान मिले लोहे का उनका कामकाज था, उनकी गाड़ी से हम नीचे गीता भवन ऋषिकेश आये वहाँ चिरंजीलालजी नाम के वृद्ध प्रबंधक थे, वे इस शरीर के नानाजी से परिचित थे। नानाजी ऋषिकेश जाते तब गीताभवन में ठहरते थे। हम जब गुम हो गये तो नानाजी और पिताजी हमको खोजते-खोजते ऋषिकेश भी गये, प्रयागराज भी गये, ब्रज में भी गये, सभी धार्मिक स्थानों पर गये और हम नहीं मिले तो अंत में यह समझकर आ गये कि वह मर गया है अब नहीं मिलेगा, पर यज्ञोपवित संस्कार वहाँ हुआ था तो यहाँ शरीर पर एक बड़ा काला यह तिल है इसका चिरंजी लाल जी को पता था। उस समय एक 62 वर्ष के व्यक्ति ने हमारे साथ यज्ञोपवित संस्कार कराया था जब हम 9 वर्ष की आयु में थे तो वह घटना उनके ध्यान में थी। चिरंजीलाल जी ने जैसे ही हमको देखा, इस शरीर पर वो बड़ा काला तिल देखा, शरीर तो सूख गया था पर उन्होंने पहचान लिया, संकोच में उन्होंने पूछा कि आप मगाराम जी के दोहिते हो क्या? हम बोले तो नहीं लेकिन सिर हिलाकर मौन स्वीकृति दी। हमने कहा- स्वामीजी से मिलना है, तो वे बोले कि स्वामीजी अभी अजमेर में है और वहाँ तक जाने की आपकी व्यवस्था करेंगे आप गीता भवन में ठहर जाओ। उन्होंने हमारे ठहरने की व्यवस्था कर दी। हम वहाँ रुक गए।

दो-तीन दिन बाद हमको अजमेर भेजा गया। अजमेर में दौलतबाग में स्वामीजी का चातुर्मास था। जिस दिन हम पहुँचे उस दिन स्वामीजी अकाल को लेकर गाय के विषय में ही बोल रहे थे। बीकानेर में गायों का बड़ा शिविर रखा था, भागीरथ राठी उसको देखते थे। वह प्रसंग पूरा सुना और सुनकर हृदय बड़ा आतुर हो गया कि हम वहाँ देखने के लिये जाएं। तो वहीं से हम उस शिविर को देखने के लिये नारायण जी करके एक साधक हैं स्वामी जी के पास में उन्होंने किसी के साथ में हमको भेजा और कुछ दिन वहाँ रहे फिर हम चलते फिरते में सांचौर आए। बाद में मां के दर्शन करके हमको वापस जाना था पर 4 बजे नाना जी बहुत दूर से पैदल चलकर आए बिना सूचना के। वे एक उच्च कोटि की आत्मा थे। गृहस्थ में रहते हुए भी परमहंस स्थिति थी उनकी। उन्होंने आकर फिर हमें रोका और हम उस समय रुके। बाद में वे हमको स्वामीजी के पास वापस ले गए। तीन-चार वर्ष फिर हम स्वामी जी के पास ही रहे। उन चार वर्षो में 3 वर्ष चतुर्मास सांचौर के आसपास में किया। स्वामीजी के साथ में अंतिम चातुर्मास मथानिया में किया 1992 में। इसी चातुर्मास के बाद यहाँ से लक्ष्मणा जी हमारे गोभक्त केशाजी सुथार के पिताजी हैं, नाना जी और

बिजलाराम जी वकील साहब ये सब आये और हमको लेकर आ गये। हमने कहा हम एकान्त में रूकेंगे, शहर में जहाँ पहले चातुर्मास किया था वहाँ आवाज खूब आती थी। तो गोलासन में और यहाँ पथमेड़ा के गोचर में देखा तो पथमेड़ा का गोचर ठीक लगा। यहाँ थोड़ी दूरी पर एक चातुर्मास हम कर चुके थे शिव मंदिर में। यहाँ आने के बाद पथमेड़ा के जो लोग हैं, चौधरी हैं, हमारे यहाँ आज सब ये विराजे हैं, (नागजी भाई, छोगारामजी और ये सब अभी मिले थे) इन लोगों ने कहा कि आप तो यहाँ विराजें, हम सेवा करेंगे। इनके पिताजी आदि सबने यहाँ रहने की व्यवस्था की पानी आदि की, कुटिया बनाई। रामाजी बा थे वे बड़े संत सेवी थे।

हरिनाथ जी महाराज जो मानव सेवा संघ के संस्थापक श्री शरणानंदजी महाराज के सखा थे, वे थोड़े दिन बाद हमारे पास आ गये। वे हमारे अभिभावक की भूमिका में थे। तो वे और नानाजी दोनों हमारे साथ सत्संग करते थे और हम लोग यहाँ रहते थे। बीच में हमारी हरियाणा यात्रा हो गई सिरसा में, ढोल पालिया गांव में ऐलनाबाद के पास वहाँ कोई कार्यक्रम था कल्प का। फिर 1993 के चातुर्मास के लिये निश्चित हुआ कि यहीं करेंगे पथमेड़ा में। 1993 के चातुर्मास में यह हुआ कि कुछ लोग पाकिस्तान की सीमा से गायों को छुड़ा कर लाये जब तारबंदी नहीं थी। उसका थोड़ा विवाद बढ़ गया। उस विवाद का प्रचार प्रसार होने से अन्यत्र भी जहाँ कहीं गायें पकड़ी, लोग ले लेकर वहीं आए। उनकी संख्या महीना भर में खूब बढ़ गई। अब हमारा तो कुछ संकल्प ऐसा था नहीं संस्था आदि का। एक चसक (विरह वेदना) थी कि हमारा साथी हमसे अलग हो गया वह गोपाल था। ये सब गाएं उनकी है। अपराध मनुष्य करता है और दु:खी गाएं क्यों होती है? यह हमारी एक नाराजगी चल रही थी ठाकुरजी से। भगवान से लड़ाई चल रही थी कि अपराध तो मनुष्य करता है और उसकी सजा आप गायों को क्यों देते हो? यहाँ यह गोसेवा जब प्रारम्भ हुई तो अनायास ही हुई। कोई चाहता नहीं था कि संस्था बने और यह सब हो, कोई शक्ति करवाना चाहती थी तो बढ़ता गया, बढ़ता गया, बढ़ता गया, गायों की संख्या बढ़ती गई। स्वामीजी को पता लगा, 1998 में जोधपुर में चातुर्मास था, हम गए तो स्वामीजी बोले कि गायों की संख्या बहुत बढ़ रही है पथमेड़ा में फिर उनका पालन-पौषण कैसे होगा? हमने कहा स्वामीजी गायों को चारा मिला तो हम कोई भिक्षा लेंगे, गायों को पानी मिला तो हम भी पानी पियेंगे। गायों को कुछ नहीं मिला तो हम भी कुछ नहीं लेंगे। स्वामीजी बोले और क्या करोगे? तो हम बोले- रोएंगे। यह सुनकर स्वामीजी खूब हंसे।

आप आश्चर्य करेंगे कि गायों की संख्या बढ़ते-बढ़ते 50 हजार के पार हुई और 1999-2000 में दुष्काल के समय ऐसी स्थिति आई कि केम्पों भी बिना चारा के भूख से गाएं मर रही है, बाहर भी मर रही है, बीमारी आ गई, जो ट्रस्टी और कार्यकर्ता थे वे सब अपने-अपने घरों में चले गये और एक-दो थे वो आत्महत्या की तैयारी में खड़े थे। हम पंजाब गये हुए थे, हमें समाचार मिला तो हम वहाँ से लौटकर आये, देखा तो स्थिति बहुत विकट थी। ऐसी स्थिति को देखकर वास्तव में हम तीन दिन अकेले रोये क्योंकि हमारे पास कोई उपाय नहीं था। तो हमने तुरन्त पत्र लिखा द्वारिकाधीश को कि यह सब खेल आपका ही है, आपने ही इसे शुरू किया था और आप ही परीक्षा लेते हो तो हम तो सदा फेल हैं। आपके अटपटे प्रश्नों के उत्तर हमारे पास नहीं है। वो भाव थे उसको लिखकर एक प्रति द्वारिकाधीश को भेजी, एक प्रति श्री अटल बिहारी वाजपेई को भेजी, एक-एक प्रति राज. और गुजरात के मुख्यमंत्रियों को भेजी, एक प्रति अशोक जी सिंघल को भेजी और एक प्रति राजस्थान पत्रिका का संवाददाता था वो ले गया। उसको हमने कहा कि 10 दिन में.....लगातार

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

प्रार्थना क्या है ?

........पिछले अंक से आगे

.......भोग्य वस्तु का विनाश और भोगने की शक्ति का ह्रास यह सुख भोग की बात है, पर जब हम सुखियों को देखकर प्रसन्न होते हैं तो न तो सुख भोगने की शक्ति का ह्रास होता है और न ही भोगने की शक्ति का नाश होता है, अपितु बिना ही भोगे भोग से भी कई गुना अधिक प्रसन्नता प्राप्त होती है जो किसी भी भोग से प्राप्त नहीं होती है। इस दृष्टि से यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि भाई सुखी का कर्तव्य है सेवा। सेवा क्या? दु:खियों के दु:ख में दु:खी होना और सुखियों के सुख में प्रसन्न होना। करुणा और प्रसन्नता का जीवन में जो आ जाना है उसी का नाम सच्ची सेवा है।

देखिए जैसे गऊ माताएं स्वस्थ हो गई, लंपी वाली बात हम आपको कह रहे हैं, जब यह रोग फैला और हम चातुर्मास पूरा करके निकले तो हमने राजस्थान और गुजरात के बड़े भाग का एक प्रवास किया तो सभी उदास, सभी व्याकुल सभी बैठे थे। सैकड़ो लोग मिले, लगे हुए थे, रो रहे थे, पट्टी कर रहे थे, भोजन छूट गया, युवा बच्चे कभी परिश्रम नहीं किया ऐसे बच्चे भी लगे हुए थे। वे सब कुछ सामान्य जीव नहीं थे। सभी विशेष आत्माएं थी। एक सप्ताह बाद में वह रोग स्थल हो गया (रुक गया) और पता लगा कि अब संक्रमण नहीं हो रहा है। गाएं स्वस्थ होने लगी। गायों का स्वास्थ्य अच्छा होने लगा तो सभी में प्रसन्नता का रस बहने लगा। सभी में जो निराशा, हताशा, उदासी का भाव था वो प्रसन्नता में बदल गया। एक जगह तो बच्चे बोले कि महाराज जी अब देखा नहीं जाता है, इन्हीं के पास थी सैकड़ो गाएं घाव से भरी हुई। हम गए भीड़ थी लोगों की खूब गायों के बीच में तो कुछ लड़के बोले कि अब हम कुछ नहीं कर सकते हैं। मतलब एकदम निराश, हताश हो गए।

हमने कहा नहीं निराश नहीं होना भगवान अपने साथ है। गोमाता की रक्षा भगवान करते हैं। बोले सरकार कुछ करती नहीं। कोरोना आया और शायद कोई एक भी आदमी मरा नहीं था, 400-500 आदमी संक्रमित हुए थे पर पूरे देश में तालाबंदी हो गई, पूरा देश चौकन्ना हो गया, सारी सत्ता उसमें लग गई और पिछले महीने में पाकिस्तान की सीमा से लगते हुए क्षेत्र में 5 लाख गाएं अच्छी नस्ल की तड़प-तड़प के मुख से खून निकला आंखों से खून निकला जिसने वह दृश्य देखा उनका हृदय फटने लगा, इस तरह से मर गई फिर भी न प्रांत सरकारों ने और न भारत सरकार ने उसके लिए कुछ किया। गोभक्तों की हताशा का यही कारण कि अब हम किसके पास जाएं? कोई दवाई मिल नहीं रही, सरकारी डॉक्टर आ भी नहीं रहे हैं, आते हैं तो दूर बैठते हैं।

तो हमने कहा ठीक है, पर गोमाता की रक्षा तो गोविन्द करेंगे, हम तो प्रार्थना करें। प्रार्थना उन तक पहुंचती है। यद्यपि उनको सब पता है पर वह हमारे मुख से, हमारे हृदय से पुकार सुनना चाहते हैं। और सज्जनों आश्चर्य है, चमत्कार तो है ही यह पर आश्चर्य है कि वह रोग एकदम रुक गया। कोई दवाई से नहीं, कोई उपाय से नहीं, प्रार्थना से रुका अन्यथा तो कोई आधार नहीं था रोकने का। रुक गया। गाएं स्वस्थ हो गई तो वे ही बच्चे, वे ही युवा, वे ही साधु इतने प्रसन्न हो गए, इतने आनंदित उनके

चेहरे खिल गए, उनके हृदय में प्रसन्नता का रस बहने लगा। जिन हृदयों में करूणा बह रही थी, गायों का दु:ख देखकर जो करूणित थे, वे गायों का सुख देख प्रसन्न हो गए बस यही सेवा है, इसी का नाम सेवा है।

तो सेवा का अर्थ यह भी नहीं है कि जिसकी हम सेवा करते हैं वह हमारा अपना नहीं है अथवा जिन साधनों से हम सेवा करते हैं वे उसके नहीं है? जिसकी हम सेवा करते हैं वे हमारे अपने हैं, जिन वस्तुओं से हम सेवा करते हैं वे वस्तुओं भी उन्हीं की है। अगर किसी वस्तु को हम अपनी मानकर सेवा करते हैं तो उसका अर्थ सेवा नहीं है, उसका अर्थ पुण्य कर्म है। बहुत सारे पुण्यशाली होते हैं, उपार्जन करते हैं और परमार्थ में लगाते हैं तो यह पुण्य कर्म है। पुण्य कर्म और सेवा में एक बड़ा भारी अंतर है। जो पुण्य कर्म है उसका आरंभ कामना से होता है और जिसका आरंभ कामना से होता है उसका परिणाम भोग होता है, उसका परिणाम करुणा नहीं होती, उसका परिणाम प्रसन्नता नहीं होती और भोग का परिणाम सदैव रोग होता है। जिसका परिणाम रोग न हो ऐसा कोई भोग है ही नहीं। जिसका परिणाम जड़ता ना हो ऐसा कोई भोग है ही नहीं। भोग है जो हमें पराधीन बनाते हैं।

भोग प्राणी को पराधीनता में, जड़ता में आबद करता है, किन्तु सेवा पराधीन नहीं बनाती, जड़ता में आबद नहीं करती अपितु एक चेतना प्रदान करती है, सेवा जो है वह हमें स्वाधीनता देती है। वह पराधीन नहीं बनाती। सेवा हमको जड़ता से चेतना की ओर ले जाती है, अशांति से शांति की ओर ले जाती है, पराधीनता से स्वाधीनता की ओर ले जाती है और असत्य से सत्य की ओर ले जाती है उसका नाम सेवा है। इस दृष्टि से सेवा बड़े ही महत्व की वस्तु है, किंतु सेवा इस अंश में कर सकते हैं जिस अंश में हम सुखी हैं। सुखी का साधन सेवा है। इसका अर्थ कोई यह न समझे कि जो सुखी नहीं है वह साधक नहीं हो सकता। साधक तो वह भी हो सकता है, लेकिन दु:खी होने पर उसका साधन त्याग है। दु:खी भी साधक है सुखी भी साधक है। दु:खिया के लिए त्याग साधन है। दु:ख में त्याग को साधन के रूप में अपनाना यानि त्याग ही उसका साधन है और सुखिया के लिए सेवा साधन है। तो त्याग दु:खिया के लिए साधन और सुखी होने पर उसका साधन सेवा है। इससे यह स्पष्ट हो गया कि सेवा और त्याग के द्वारा हम सबकी दासता से अर्थात् सुख की दासतां और दु:ख के भय से मुक्त हो सकते हैं। सेवा से हम सुख की दासता से मुक्त हो सकते हैं और त्याग से हम दु:ख के भय से मुक्त हो सकते हैं।

अब आप विचार करें, बहुत गंभीरता से विचार करें- सुख की दासता और दु:ख के भय का नाश होना ही सद्गति है कि और कोई सद्गति है? भाई दु:ख का भय मिट जाए और सुख की दासता मिट जाए इसी का नाम सद्गति है, इसी का नाम स्वाधीनता है, इसी को मुक्ति कहते हैं। सद्गति, स्वाधीनता और मुक्ति इसी को कहते हैं। सद्गति मुक्ति और स्वाधीनता इसी का नाम है, इसी का नाम अध्यात्म जीवन है। अध्यात्म जीवन और क्या है? अध्यात्म जीवन तो वही है जिसमें सुख की दासता न हो और दु:ख का भय न हो। प्रार्थना इससे आगे की बात है।

सद्गति आपको मिल गई, मुक्ति आपको मिल गई, अध्यात्म जीवन आपको मिल गया, आप दु:खों से मुक्त हो गए, सुखों के बंधन से छूट गए परंतु प्रार्थना अभी पूरी नहीं हुई। प्रार्थना तो इससे आगे भी हमारा साथ देती है। जब सुख की दासता हमारे आपके जीवन में नहीं होगी, दु:ख का भय हमारे आपके जीवन में नहीं होगा तब क्या होगा? जो सुख की दासता और दु:ख के भय से मुक्त है उसमें अहम भाव नहीं रह सकता और जहाँ अहम भाव नहीं रह सकता वहँ भेद नहीं रह सकता और जहाँ भेद नहीं रह सकता वहाँ योग और बौद्ध अपने आप आ जाते

हैं, क्योंकि योग दूरी को नहीं रहने देता, भिन्नता को नहीं रहने देता। तो जिससे हम प्रार्थना कर रहे थे, हमारे प्रभु से, हमारे नाथ से, जो हमारा अपना है उससे हमारा योग हो जाएगा और उसका हमें बौद्ध भी हो जाएगा, क्योंकि सुख की दासता और दु:ख के भय का नाश होते ही सीमित अहम भाव का नाश हो जाएगा। यही अध्यात्म जीवन है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि प्रार्थना का जो दूसरा भाग है उसमें सुख की दासता व दु:ख के भय से मुक्त होने वाली बात है वह अध्यात्म जीवन की पूर्णता है और सेवा त्याग के बल की जो बात है वह भौतिक जीवन की पूर्णता है। भौतिक जीवन क्या है? समस्त संसार एक है और दूसरों का दु:ख हमारा अपना ही दु:ख है और दूसरों का सुख हमारा अपना ही सुख है। इससे बढ़कर कोई और निष्काम कर्मवाद या भौतिक विज्ञान नहीं हो सकता। तो भाई भौतिकवाद कोई बुरी वस्तु नहीं है, भौतिकवादी का कर्तव्य क्या है? भौतिकवादी का कर्तव्य सेवा और त्याग है। भौतिकवाद की पराकाष्ठा सेवा और त्याग में है। सेवा और त्याग का फल क्या है? सुख की दासता और दु:ख के भय का नाश। जब सुख की दासता और दु:ख के भय का नाश हो जाता है तो स्वाधीन, चिन्मय, शांत और अमर यह जीवन मिल जाता है। यह अध्यात्म जीवन है।

तो भौतिक जीवन की जो साधना है उससे क्या हुआ? उससे अध्यात्म जीवन में प्रवेश हो गया। इस दृष्टि से भौतिकवाद और अध्यात्मवाद अलग-अलग नहीं है, एक ही जीवन के दो पहलू है। भौतिकवाद ने कर्तव्यपरायणता का पाठ पढ़ाया तो अध्यात्म वाद ने अमर बनाया। हमको आपको अमरत्व की आवश्यकता है और कर्तव्य की भी आवश्यकता है। इसलिए भौतिकवाद भी जीवन का एक अंग है और अध्यात्मवाद भी जीवन का एक अंग है, पर यहीं उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो जाती। इसके बाद प्रार्थना में यह बात बताई है कि हम सेवा और त्याग का बल किसलिये मांग रहे हैं, इसलिए मांग रहे हैं जिससे यह सारा संसार सुख की दासता और दु:ख के भय से मुक्त हो जाए। अब सुख की दासता और दु:ख के भय से मुक्त होना है तब यह प्रार्थना की गई कि आपके पवित्र प्रेम का आस्वादन करने के लिए ही सुख की दासता और दु:ख के भय से मुक्त होना है। सुख की दासता और दु:ख के भय से मुक्त इसलिए होना है ताकि हम आपके पवित्र प्रेम का आस्वादन कर सकें।

अब आप देखेंगे कि जिससे हम प्रार्थना कर रहे हैं, जो हमारे अपने हैं, जिससे हमारा नित्य संबंध है, उसी से पवित्र प्रेम की प्रार्थना हम करते हैं। अब आप सोचो जिससे हम प्रार्थना करने जाएं और उससे कहें कि हम आपके पवित्र प्रेम को चाहते हैं तो क्या अपना प्रेम किसी को अच्छा नहीं लगेगा? क्या अपना प्रेम देने में किसी को कठिनाई होगी? तो आपको मानना पड़ेगा कि प्रेम एक ऐसा अलौकिक तत्व है जिसका आदान-प्रदान रस रूप में होता है। प्रेम देने में भी रस है और प्रेम पाने में भी रस है। अब आप कहेंगे कि जब प्रेम का आदान-प्रदान रस रूप है तो फिर भाई प्रेम तो कोई अपवित्र वस्तु नहीं होती तो फिर आपने प्रेम के साथ में 'पवित्र' शब्द विशेषण क्यों लगाया? जब प्रेम स्वयं ही पवित्र है तो फिर आपने पवित्रता की बात क्यों कही? तो इस संबंध में विचार करने में ऐसा ध्यान में आता है कि प्रेम अपवित्र तो नहीं है परन्तु प्रेम के दो भाव होते हैं। प्रेम का एक भाव तो यह है कि जिसमें कोई प्रेमपात्र की समीपता स्वीकार करके अपने रस को सुरक्षित रखता है थोड़ी सूक्ष्म बात है, थोड़ी मार्मिक बात है किन्तु प्रेम का एक दूसरा पक्ष यह है कि प्रेमी प्रेमपात्र के रस की बात सोचता है, पर अपने रस की बात नहीं सोचता है। तो जहाँ प्रेमी प्रेमास्पद के रस की बात सोचता है वहाँ प्रेम के साथ पवित्र विशेषण लगाया है। यद्यपि प्रेम अपवित्र नहीं है, स्वरूप से ही पवित्र है, किन्तु इसका अर्थ यह है कि.... लगातार

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

संकट गाय पर नहीं, सनातन धर्म पर है

सज्जनों ! धर्म विहीन मनुष्य पशु से भी गया बीता होता है ऐसा संतजन कहते हैं। जिनके जीवन में सत्य न हो, दया न हो, दान ना हो, अहिंसा न हो ऐसा मनुष्य धर्म विहीन कहलाता है। धर्म के चार चरण है- सत्य, अहिंसा, दया और दान। इन चार पावों पर धर्म टिका हुआ है। जो मनुष्य धर्म को धारण करता है वह धर्मात्मा कहलाता है और जो धर्म को धारण नहीं करता है वह पापात्मा कहलाता है तथा वह पशु है। पशु आदि अपने प्रारब्ध से बंधे हुए होने के कारण पूर्व जन्मों में किये गये कर्मो का फल तो भोगते हैं लेकिन नया कोई पाप कर्म नहीं करते हैं परंतु मानव देहधारी आत्मा अगर कोई धर्म विहीन है तो वह नए पाप कर्म करेगी क्योंकि मानव शरीर नया कर्म करने के लिए मिला है। मानव शरीर पुराने कर्मो के फल को भोगने के लिए नहीं मिला है। पूर्व जन्मों के कर्मो के फलों को भोगने के लिए तो अनेकों योनियों है। 84 लाख योनियों में एक मनुष्य योनि है जो कि नए कर्म करने के लिए स्वतंत्र है। 84 लाख योनियों में मनुष्य योनि के अतिरिक्त योनियों पूर्व जन्मों के कर्मो के फल को भोगने के लिए ही प्रकृति के साम्राज्य में रचित की गई है। यह मानव देह पूर्ण कम फलों को भोगने के लिए नहीं है, पुराने सुख और दुःखों को भोगने के लिए नहीं है, पुराने कर्मो के फलस्वरूप मिलने वाले जो सुख और दुःख है उसका भोग करने के लिए दूसरी योनियों है। मनुष्य योनि सुख और दुःख से ऊपर उठकर परमानंद की प्राप्ति के लिए मिली है परम सुख की प्राप्ति के लिए मिली है। परमानंद तभी प्राप्त हो सकता है जब मनुष्य धर्ममय जीवन जिए।

धर्म क्या है? मनुष्य की चेतना को विकसित करने की कला धर्म है। धर्म मनुष्य के जीवन जीने की पद्धति है। उस अनुसार अगर जीवन जिया जाए तो वह अपना कल्याण, जगत का हित और परामात्मा की प्रसन्नता- ये तीनों एक साथ प्राप्त कर सकता है, अगर धर्म में जीवन जिएं तो। धर्म का मूल सत्य है।

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान।

अर्थः शास्त्रों के अनुसार धर्म के चार चरण (पैर) माने गए हैं सत्य, अहिंसा, दया और दान। तुलसीदास जी कहते हैं कि कलियुग में धर्म के इन चार चरणों में से अब केवल एक ही चरण 'दान' मुख्य (प्रधान) रह गया है। कलियुग में मनुष्य जिस किसी भी प्रकार से या किसी भी विधि से (श्रद्धापूर्वक या बिना किसी दिखावे के) दान करता है, वह दान उसका कल्याण करता है।

चारों युगों में धर्म का अपना अस्तित्व रहता है। सतयुग में सत्य धर्म का मूल होता है। त्रेता में अहिंसा धर्म का मूल होता है। द्वापर में दया धर्म का मूल होता है और कलियुग में दान धर्म का मूल होता है। सतयुग में चारों पांव से धर्म रहता है अर्थात मनुष्य के जीवन में सत्य भी है, अहिंसा भी है, दया भी है और दान भी है। ये चारों रहते हैं। त्रेता में धर्म के तीन पद रहते हैं- अहिंसा, दया व दान और द्वापर मैं केवल दो ही पद रहते हैं- दया और दान। कलियुग में केवल एक ही पद बचता है- दान। एक पांव भी बचा हुआ है तो धर्म है, धर्म बचा हुआ है। किसी भी तरह से परमार्थ का काम हो रहा है, कोई एक मनुष्य भी परमार्थ कर रहा है तो धरती पर धर्म बचा हुआ है। दान का मतलब यह नहीं कि अपना नाम छापने

के लिए करो, नाम बड़ाई के लिए करो। एक सज्जन थे जिन्होंने दो ट्रस्ट बना रखे थे। 84 वर्ष के हुए सन 2002 में तो लोग बोले कि यह बड़े दानी है, बड़े धर्मात्मा है। किसी ने कहा तो हम गए तो वह बोले आई एम 84, मैं 84 वर्ष का हूं और 84 लाख रुपए दान कर चुका हूं। हमने पूछा कहाँ किये हैं तो बोला कि एक ट्रस्ट था मेरे नाम का उसमें उठाकर दूसरा ट्रस्ट वह भी मेरे नाम का उसमें किया। मतलब वह पैसा अपने ही नाम जमा कर दिया और कहा कि मैं दान कर दिया। तो ऐसे ही लोग नाम के लिए, बड़ाई के लिए, दिखावे के लिए एक तरह से काम करते हैं लेकिन दान दया से ही होता है। देखा जाए तो दान के जड़ में दया है। दया के बिना दान हो ही नहीं सकता वह तो अहंकार है। वह तो अहंकार का पौषण है। दया से हृदय द्रवित होवे कि अरे राम-राम-राम, इनकी पीड़ा कैसे मिटाएं? इनके सुख के लिये अपने सुख का त्याग करें उसका नाम त्याग है, उसका नाम परमार्थ है।

पर-पीड़ा से पीड़ित हो उठे मन, वह गंगाजल है। और पर-सेवा में लग जाए तन-मन-धन, वह तुलसीदल है। यह परमार्थ है। पर पीड़ा से पीड़ित हो अन्य की सेवा में अपना जीवन लगे इसी का नाम दान है।

जो मान-बड़ाई का भूखा होता है उसकी प्रशंसा करते ही उसमें फूंक भर जाती है। फूंक भरते ही गिर जाते हैं। यह हाल है मनुष्यों का। थोड़ी वाहवाही हुई कि अपने को भगवान मानने लग जाते हैं, अपने को सर्वोपरि मानने लग जाते हैं। थोड़ी बड़ाई कर दो कि भाई वाह आप तो बड़े दानी हो, तो आदमी फूल जाता है।

तो सज्जनों निवेदन यह था कि परमार्थ के बिना मनुष्य शरीर आत्मा को मिला भले ही हो पर वह अपना उद्धार नहीं कर सकता, नीचे ही जाएगी अधोगति में जाएगी फिर वही 84 लाख का चक्कर है। अगर मनुष्य शरीर पाकर मुक्त नहीं होना है, प्रभु को नहीं पाना है, मोक्ष नहीं चाहता है तो कम से कम वापस मनुष्य तो बनना, इससे नीचे तो मत जाना। तो भाई मनुष्य भी तब बनेंगे जब अपने अंदर मनुष्यता होगी, मानवता होगी। थोड़ी देर के लिए आप धर्म को छोड़ दो, मनुष्य शरीर तो तभी मिलेगा जब मानवता होगी।

मानवता किसे कहते हैं? मानवता कहते हैं कृतज्ञता को। किसी ने हमारा थोड़ा भी कभी सहयोग किया हो, हमारा भला किया हो, हमारा उपकार किया हो तो उनका हम पर एहसान मानना, उनका कृतज्ञ होना, प्रत्युत्तर में उनका सहयोग करना, उनका भला करना और उनका एहसान उतारने के लिए हर समय तैयार रहना, यह मनुष्य का काम है। मनुष्य वह है जो अपने पर किसी के द्वारा किये गये उपकार को भूलता नहीं है। किसी ने भलाई की है तो भूलो मत, किसी ने बुराई की है तो उसे भूल जाओ। कोई आपकी बुराई करता है तो उसे याद मत रखो, याद रखने से नुकसान होगा, यह याद रखने की चीज़ नहीं है। नुकसान होगा उससे, द्वेष बढ़ेगा और द्वेष भी जहर है। कोई बुराई करता हो तो उसे याद ही मत रखो। पर यदि किसी ने भलाई की है तो याद रखो, उसने बोझ चढ़ाया है हमारे ऊपर। अवसर मिलते ही हम उसे उतारने को तत्पर हो जाएं उसी का नाम मनुष्यता है।

तो सज्जनों! हम मनुष्य जाति पर इस धरती पर सबसे बड़ा उपकार अगर किसी का है तो वो है वेदलक्षणा गोमाता का। वेदलक्षणा गोमाता हम इसलिये कहते हैं कि जिसके थुम्भी (कुकुद) हो, जिसके गल कम्बल हो उसी को हमारे सत् शास्त्र, हमारे पूर्वज गाय कहते हैं। वेदलक्षणा गाय का गोमूत्र और गोबर परम पवित्र है। उनका दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र- ये पंचगव्य त्रिलोकी में परम पावन है। मनुष्य के हड्डी में भी कोई साध्य-असाध्य प्रकार का रोग हो तो इस पंचगव्य का एक महीना तक विधिवत पान

करने से वो समाप्त हो जाते हैं जैसे अग्नि से सूखी लकड़ी भस्म हो जाती है। ऐसे ही एक महीना तक इस पंचगव्य का पान करने से सारे दोष भस्मिभूत हो जाते हैं। ऐसी ृशक्ति है पंचगव्य की। यह पंचगव्य केवल थुम्भी और गल कम्बल वाली वेदलक्षणा गोमाता है इसी से प्राप्त होता है। इस पृथ्वी पर किसी भी प्राणी का मल-मूत्र पवित्र नहीं होता है, चाहे वो मनुष्य हो, देवता हो, संत-सिद्ध और अवतार ही क्यों न हो। गाय को छोड़कर धरती पर आये हुए किसी भी प्राणी का मल-मूत्र पवित्र नहीं होता। इसलिये गो अनुपमय है और भगवान की भी अराध्या है। भोलेनाथ अपने बचाव के लिये गो का आश्रय लेते हैं, गो के गर्भ में आश्रय लेते हैं और नील वृषभ के रूप में अवतरित होते हैं।

सनातन संस्कृति की जितनी भी लीलाएं हो भले ही वो शिव स्वरूप में हो, ब्रह्माजी के स्वरूप में हो, भले ही वो राम स्वरूप में हो, चाहे कृष्ण स्वरूप में हो, शक्ति के स्वरूप में हो, चाहे गणेश के स्वरूप में हो इन सबमें वेदलक्षणा गोमाता की प्रधान भूमिका है। हम सब सनातन धर्मावलम्बी भारतवर्ष में जन्म लिया है यह हमारा सौभाग्य है। यह जो धर्म है सबसे ऊँचा दया और दान यह मनुष्य के जीवन में तभी आता है जब वह सात्विक बने। मनुष्य सात्विक आहार और संयमित विहार को जीवन में अपनाये तभी वह धर्म पर चल सकता है। सात्विक आहार मनुष्य को वेदलक्षणा गोमाता से ही प्राप्त होता है। हजारों लाखों वर्षो से मनुष्य शरीर में भारतवर्ष में जन्म लेने वाली आत्माएं अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल इसीलिये हुई कि इस पवित्र धरा पर वेदलक्षणा गोमाता की उपस्थिति के कारण पवित्र जल, पवित्र अन्न और पवित्र हवा थी। जबसे इस देश में अपवित्र और विषैला अन्न उत्पन्न होने लगा, हवा में अनेक प्रकार के विष घोल दिये गये, जल में जहर घोल दिये गये, कृषि पद्धति हिंसक हो गई तब से देखलें चार पांच दशकों से यह स्थिति देश में फैली है। इन पांच दशकों में बहुत मुश्किल है शस्त्रीय अंत:करण का विकसित होना। बात भगवान की करो, आत्मा की करो, परमात्मा की करो, सबकी सुन लो लिख भी लोगे, बोलोगे, चिंतन कर लोगे, दूसरों को सुना दोगे लेकिन जीवन में तभी उतरेगी जब अंत:करण शुद्ध होगा और अंतकरण शुद्ध तभी होगा जब सत्व शुद्ध होगा और सत्व शुद्ध तभी होगा जब अन्न शुद्ध होगा। आहार सात्विक होगा तभी अंतकरण शुद्ध होगा। आहार का एक भाग स्थूल शरीर के रूप में और दूसरा भाग सूक्ष्म शरीर (मन, बुद्धि) के रूप में परिणीत होता है। इसलिए हमारे पूर्वजों ने, हमारे शास्त्रों में आहार पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा है। आचार और आहार ये दोनों मनुष्य के जीवन की नींव है। **आचार: प्रथमा धर्म:** (आचरण ही पहला धर्म है)

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।।

आहार की शुद्धि होने पर अन्त:करण (मन) शुद्ध होता है। अन्त:करण शुद्ध होने पर बुद्धि या स्मृति स्थिर (अटल) हो जाती है। स्मृति के स्थिर हो जाने पर हृदय की अज्ञान रूपी सभी गांठें (जैसे मोह, माया, बंधन) पूरी तरह खुल जाती हैं और मोक्ष प्राप्त होता है।

हमारे पूर्वज हजारों सालों से शुद्ध सात्विक आहार लेते आए हैं परंतु आज हमारा अन्न दूषित हो गया है। धरती में डीएपी यूरिया कीटनाशक डालने से सारा अन्न विषैला हो गया है। मानो न मानो आपकी मर्जी है, लेकिन धरती माँ है और माँ को विष देना अपराध है। माँ का दूध पी रहे हो इसलिए अपराध है। जिस माँ का दूध पी रहे हो उसी को विष दे रहे हो, वही विष उनके दूध में आपको ही प्राप्त हो रहा है। आपने कुछ समय पहले सुना होगा कुछ प्रांतों के न्यायाधीश, उच्च्व न्यायालय के न्यायाधीशों की टिप्पणी सुनी होगी कि सब्जी में विष होने से नवप्रसूता मांताओं का दूध विषैला बना और उनके शिशु रोगी हुए।...

रामचरितमानस में गोमहिमा

(संकलित)

गोस्वामी तुलसीदासकृत श्री रामचरितमानस में गो (गाय) की महिमा और उनके संरक्षण को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। रामचरितमानस के अनुसार, भगवान श्री राम के अवतार लेने के प्रमुख कारणों में से एक कारण **गौ-रक्षा** भी है। रामचरितमानस में गो महिमा से संबंधित प्रमुख प्रसंग निम्नलिखित हैं:-

1. श्रीराम के अवतार लेने का मुख्य कारण:

मानस के बालकाण्ड में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भगवान ने ब्राह्मणों, गायों, देवताओं और संतों के कल्याण के लिए ही मनुष्य रूप धारण किया है।

विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।।

(बालकाण्ड, दोहा 192)

अर्थात् ब्राह्मण, गाय, देवता और संतों के हित के लिए भगवान ने स्वेच्छा से दिव्य शरीर धारण किया है।

2. बाल-लीला में गौ-रस का आनंद:

भोजन करहिं चपल अति कपि बालक संग लीन्ह।
गौ रस दधि माखन मधुर कोमल कवल करीन्ह।।

अर्थ: प्रभु राम अपने सखाओं के साथ गौ-रस (दूध), दही और मक्खन जैसे सात्विक एवं मधुर पदार्थो का अत्यंत चाव से भोग लगाते थे।

3. भरत जी की गो-सेवा और शपथ:

जब भरत जी भगवान राम को मनाने वन में जाते हैं, तब वे अपनी निष्पापता सिद्ध करने के लिए कई शपथ लेते हैं। उनमें से एक गो-हत्या के पाप का उल्लेख है, जो यह दर्शाता है कि उस समय गो-हत्या को सबसे बड़ा महापाप माना जाता था।

जे पातक उपपातक अहहीं।
कहि न सकहिं कवि मति बल गहहीं।
गोबध बिप्रबध निरत कुसंगी।
कपटी कुटिल कुमति कुअंगी।।

भरत जी कहते हैं कि यदि श्री राम के वन गमन में मेरी रत्ती भर भी सहमति हो तो मुझे वह पाप लगे जो गाय की हत्या करने वाले को लगता है।

3. राम राज्य में गायों की स्थिति :

राम राज्य का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं कि उस समय गायें प्रसन्न रहती थीं और प्रचुर मात्रा में दूध देती थीं।

गई दुहिहिं सब सुखी अनंदा।
जनु सुभ काल सुरभी नंदा।।
बरषहिं कामदुघा महिमंडल।
ससि सोभित जनु सुरपुर खंडल।।

राम राज्य में गायें कामधेनु के समान दूध देती थीं और समस्त पृथ्वी हर्षित रहती थी।

4. कलियुग में गायों की दुर्दशा का संकेत :

मानस के उत्तरकाण्ड में काकभुशुण्डि जी कलियुग के लक्षणों का वर्णन करते हुए गायों की उपेक्षा पर दु:ख व्यक्त करते हैं:

कपि कुपथ कुचालि कुमति कुजाती।
गावैं गीत बहु बिधि बहु भाँती।।
गो भक्षी नर कुटिल कठोर।
कलिमल ग्रसित लोभ बस चोर।।

यहाँ बताया गया है कि कलियुग के प्रभाव से लोग गायों के प्रति क्रूर हो जाएंगे।

5. ब्राह्मण और गौ की पूजा का महत्व:

मानस में विभिन्न स्थानों पर विप्र-धेनु (ब्राह्मण और गाय) की पूजा को सर्वोपरि बताया गया है। यज्ञों और मांगलिक कार्यो में गायों का दान और उनकी सेवा को महान पुण्य का कार्य माना गया है।

कंद मूल फल अंकुर नीके। दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के।।
पय सनेह बस धेनु स्रवही। देखि राम मुनि हरष न थोरी।।

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे.......

......महाराजजी बोले- एक युवा अवधूत महात्मा हमको यहाँ तक अपने साथ लाए, धूंणा चेताया, हम आपस में मिलते रहेंगे अभी माताजी की गाय चराने जाना है ऐसा कहकर इधर से गए थे। इसके बाद अभी तक नहीं आए हैं।

बाजपेयजी के अनुरोध पर महाराज जी उन दोनों के साथ जलप्रपात की परिक्रमा करते हुए वन में मीलभर चलकर अनसूया माताजी मन्दिर दर्शन करने पहुँच गए। उस दिन अंधेरा अधिक हो जाने के कारण रात्रिकालीन विश्राम मन्दिर मण्डप में किया।

रात को तीसरे पहर में एक वात्सल्य का मूर्तिमान श्रीविग्रह दिव्य माँ, पूर्व परिचित युवा अवधूत साधु सहित मन्दिर मण्डप में पधारी और महाराजजी को जगाकर बोली- बेटा अब तुम 33 माह तक महर्षि अत्रिजी की गुफा में अमृत कुण्ड पर निवास करिए और इस मन्दिर से आए गोदुग्ध व फल लेते रहिए। यह मेरा गोप्रेमी अवधूत पुत्र प्रतिदिन तुम्हारे पास आयेगा। आज से यही तुम्हारा संरक्षक व अभिभावक होगा। अभी इनके साथ गुफा के लिए प्रस्थान करो और यह कंबल ले जाओ इसको बारह मास रात दिन ओढे हुए रहना इससे शरीर में कोई बीमारी नहीं होगी।

पूज्या माताजी की आज्ञा पाकर महाराजजी उस तेजस्वी युवा साधु अभिभावक के साथ अत्रि गुफा अमृत कुण्ड पहुंच गए। गुफा में आसन पर बैठने के बाद गोप्रेमी अवधूत महापुरुष ने आपको शाम्भवी व उनमुनी मुद्रा सहित सहज समाधि और राजयोग का बोद्ध कराया एवं जन्मभूमि मुम्बई, आशापुरा माता का मढ भुज, गौरी कुण्ड, माताजी, पुष्करजी, काशीपुरी, नेपाल, मानसरोवर अमरकंठक यमुनातट गोकुल तथा ऋषिकेश में हुए दिव्य अनुभवो का स्मरण कराते हुए शरणागती भाव से स्थित रहने का निर्देश प्रदान कर गुफा से प्रस्थान किया।

इधर महाराजजी सतगुरु परमात्मा का विशेष अनुग्रह अनुभव करते हुए पुनः जागृत सुषुप्त अवस्था में चले गए। प्रतिदिन गोप्रेमी अवधूत महात्मा गोदुग्ध ा लेकर आते। कुछ समय गुफा में बैठकर महाराजजी को अपने साथ गुफा से बाहर पर्वतीय वनों में घुमाकर गोदर्शन कराते और चले जाते। मण्डला से पुजारीजी के साथ बाजपेयजी सेवफल पहुँचा देते थे। कभी कभी रविवार के दिन मास्टरजी स्वयं पहुंच जाते। इसी तरह दिन, रात, सप्ताह, पक्ष, मास और वर्ष व्यतीत होते गए।

33 माह पूरा होने से एक सप्ताह पूर्व गोप्रेमी अवधूत महापुरुष ने एक दिन गुफा में आकर महाराजजी से कहा कि इस जगह की भजन साधन अवधी पूरी होनी वाली है यहाँ से आपको गीता भवन ऋषिकेश होते हुए जन्म भूमि जाना है। उधर जननी पुत्र वियोग से व्यथित हो रही है। यह सुनकर महाराज- को कुछ-कुछ स्मरण होने लगा परंतु स्पष्ट समझ में नहीं आया क्या हो रहा है? इसमें भी केवल भगवान की कृपा मानकर हृदय आनंदित हो गया। गोप्रेमी अवधूत महात्मा विजय कर गए। पूर्व नियमानुसार प्रतिदिन आते जाते रहे सप्ताह पूरा होते ही गोप्रेमी अवधूत महापुरुष बोले कि आज आपको श्री अनसूया माताजी के मन्दिर चलना है एक रात्रि विश्राम करके नीचे जाइए। गोप्रेमी अवधूत जी का निर्देश पाकर महाराजश्री ने अत्री गुफा को प्रणाम कर अमृत कुण्ड में आचमन किया और धीरे-धीरे श्री अनसूया माताजी के मन्दिर पहुँच गए। आरती पश्चात पुजारीजी ने प्रसाद रूप में गोदुग्ध प्रदान किया, उसका पान करके मन्दिर मण्डप में रात को सो गए। चौथे पहर स्वपन्न में मां अनसूया जी का

आशीर्वाद और विदाई प्रसाद प्राप्त हुआ प्रकाश होने के बाद स्नान आदि नित्य नियम करके मां अनसूयाजी श्रीदत्तात्रेय भगवान तथा महागणेश जी को साष्टांग प्रणाम करके महाराज जी विजय कर गए।

मां अनसूयाजी, भगवान दत्तात्रेय, महर्षि अत्रि गुफा, अमृत गंगा जलप्रपात व महागणेशजी का संक्षिप्त इतिहास :-

अनसूया माता का मंदिर मण्डल जिला चमोली उत्तराखंड

अनसूया माता का मंदिर उत्तराखंड के चमोली जिले में गोपेश्वर के निकट मण्डल गाँव से लगभग 5-6 किमी की दूरी पर पहाड़ियों के ऊपर स्थित एक अत्यंत पवित्र और प्राचीन तीर्थ स्थल है। यह मंदिर हिमालय की ऊंची पहाड़ियों के बीच समुद्र तल से लगभग 2,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित अपनी प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। 17 वी शताब्दी में कत्यूरी राजाओं ने इस स्थान पर माता अनसूया का भव्य मंदिर बनवाया जो 18 वी शताब्दी में एक विनाशकारी भूकम्प के कारण मंदिर का मूल ढ़ांचा ध्वस्त हो गया था। इसके बाद संत ऐत्वारगिरी जी महाराज ने स्थानीय ग्रामीणों की सहायता से मंदिर का पुनः निर्माण करवाया। मंदिर परिसर में आज भी कई प्राचीन शिलाएं और मूर्तियों बिखरी हुई हैं जो इस मंदिर के समृद्ध ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं।

मान्यता है कि सतयुग के दौरान महर्षि अत्रि और उनकी पत्नी माता अनसूया ने इसी स्थान पर घोर तपस्या की थी। ऋषि अत्रि सप्तऋषियों में से एक थे और उन्होंने इस एकांत स्थान को अपनी साधना के लिए चुना था। आज भी यहाँ स्थित अत्रि मुनि की गुफा उनके निवास की गवाह मानी जाती है।

पौराणिक इतिहास के अनुसार, माता अनसूया के पातिव्रत धर्म और सतीत्व की चर्चा स्वर्गलोक तक पहुँच गई थी। माता की परीक्षा लेने के लिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) साधु का भेष धारण कर उनके आश्रम पहुँचे। उन्होंने भोजन की ृार्त रखी कि माता उन्हें निर्वस्त्र होकर भोजन कराएं। माता ने अपने तपोबल से जान लिया कि ये स्वयं त्रिदेव हैं। उन्होंने अपने जल के अभिमंत्रित छींटों से तीनों देवताओं को नन्हे शिशुओं में बदल दिया और फिर भेषधारी त्रिदेवों की शर्त की पालना करते हुए उन्हें वात्सल्य भाव से स्तनपान कराया। फिर कई वर्षो तक त्रिदेवों के नहीं लौटने पर सरस्वती, लक्ष्मी व पार्वती उन्हें ढूंढ़ती हुई पीछे आई और माता अनसूया से उनके देवों को लौटाने की प्रार्थना की। इस पर अनसूया माता ने उन्हें पुनः शिशुओं से देवरूप बनाकर लौटा दिये।

त्रिदेवों ने माता की भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया और उनके अंश से भगवान दत्तात्रेय का जन्म हुआ, जिन्हें त्रिदेवों का संयुक्त अवतार माना जाता है। दत्तात्रेय में ईश्वर और गुरु दोनों रूप हैं।

भगवान दत्तात्रेय

भगवान दत्तात्रेय को हिन्दू धर्म में धर्म में त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) के संयुक्त अवतार माने जाते हैं, जो ज्ञान, योग और संन्यास के प्रतीक हैं। महर्षि अत्रि और माता अनुसूया के पुत्र दत्तात्रेय को आदिगुरु कहा जाता है, जिन्होंने 24 गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की और प्रकृति को ही अपना गुरु माना। उन्हें परब्रह्ममूर्ति सद्‌गुरु और श्रीगुरुदेवदत्त भी कहा जाता हैं। उन्हें गुरु वंश का प्रथम गुरु, साथक, योगी और वैज्ञानिक माना माना जाता है। भगवान शंकर के बाद गुरु परंपरा परंपरा में सबसे बड़ा नाम भगवान दत्तात्रेय का आता है। मान्यता अनुसार दत्तात्रेय ने परशुराम जी को श्रीविद्या-मंत्र प्रदान की थी। यह मान्यता है कि शिवपुत्र कार्तिकेय को दत्तात्रेय ने अनेक विद्याएं दी थी। भक्त प्रहलाद को अनासक्ति-योग का उपदेश ......लगातार पढ़ते रहिये

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

.... मैया बोली- लाला तेरे चरण बड़े कोमल है, चरण में कांटे कंकर लगेंगे। बालकृष्ण प्रभु बोले कि ठीक है मैया-बाबा आप दोनों इतने हठ कर रहे हो तो एक प्रस्ताव हम करें? क्या? लाला बोले- मैया जितनी गैया हैं उन सबको जूती उपलब्ध कराओ तो मैं विचार कर सकता हूँ। इतना सुनते ही मैया बोली अरे कन्हैया! कैसी भोली सी बावरी सी बात कर रहे हो है। अरे गया तो पशु है, पशु क्या जूता पहने, जूता चप्पल तो मनुष्य ही पहना करें। पशु, इतना सुनते ही ठाकुर जी फिर लौट गए। अब क्या हुआ, क्यों रोने लगा? अरे! तूने मेरी प्राण प्यारी गैया मैया को पशु कैसे कहा मैया? मैया ने क्षमा मांगी। मैया ने कही लाला अब मैं कान पकड़ रही हूँ गोमाता को कभी पशु नहीं कहूंगी। ठाकुर जी बोले- मैया जो मनुष्य गाय को पशु माने वह नर पशु है। गाय पशु नहीं है गाय तो जगत माता है, जगत जननी है जगन माता है। आप कहेंगे यह भाव आप कहाँ से बोल रहे हैं? यह भाव पूज्य श्री डोंगरे जी महाराज का भाव है। वृंदावन में उनकी कथा हुई थी। हम सुनने गए थे। उसमें उनके मुख से मैंने सुना इस जूता छतरी वाला भाव, बहुत अच्छा लगा। बोलो भक्त वत्सल भगवान की जय!

गवां सेवा स्वधर्मो मे गावो निश्च्छत्रपादुकाः।
यथा गावस्तथा गोपाल एष धर्मः सनातनः।।

गायों की सेवा ही मेरा स्वधर्म है। गायें बिना छत्र (छाता) और बिना पादुका (जूते) के रहती है। जैसी गायें हैं, वैसे ही उनके गोपाल (कृष्ण या सेवक) होने चाहिए। यही सनातन धर्म है।

यह श्लोक संदेश देता है कि जो व्यक्ति गायों की सेवा करता है, उसे भी गायों की तरह ही सरल, निष्कपट और सादगीपूर्ण जीवन जीना चाहिए। जिस प्रकार गायें नंगे पैर और बिना किसी विलासिता (छत्र) के रहती हैं, सेवक को भी उसी भाव से उनकी सेवा में लीन रहना चाहिए।

(इसी श्लोक को कविता के रूप में अर्थ सहित नीचे दिया जा रहा है:-

गौ-सेवा ही धर्म हमारा, पावन कर्म यही है,
बिन जूते और बिन छतरी के, गऊ विचरती रही है।
जैसे गौ की सहज सादगी, वैसे हों गोपाल,
यही सनातन धर्म जगत में, रक्षक और दयाल।

जिस प्रकार गायें बिना किसी साज-सज्जा, जूते या छत्र के अत्यंत सरल जीवन जीती हैं, उनकी सेवा करने वाले गोपाल (हम सभी) को भी वैसा ही सरल और आडंबरहीन होना चाहिए। सेवा का यह भाव ही शाश्वत सत्य और हमारा वास्तविक सनातन धर्म है।

गोबिंद चले चरावन गैया।
दिनो है ऋषि आजु भलौ दिन,
कह्यौ है जसोदा मैया।
उबति न्हवै बसन भूषण,
सजि बिप्रनि देत बढ़ैया।
कारी सिर तिलकु आरती बारति,
फुनि-फुनि लेति बलैया।
चतुर्भुजदासश छक छलके सजी,
साखिन सहित बलभैया।
गिरिधर गवनत देखि एक भर,
मुख दोयो वृजराय।।

यह भजन भक्त कवि चतुर्भुजदास जी द्वारा रचित है। इसमें उस सुंदर समय का वर्णन है जब पहली बार बालक कृष्ण वन में गौएँ चराने (गोचारण) के लिए जा रहे हैं।

माता यशोदा कहती हैं कि आज का गर्गाचार्य जी ने बहुत ही शुभ और मंगलकारी है दिन निकालकर

दिया है, क्योंकि आज गोविंद (श्री कृष्ण) पहली बार गौएँ चराने जा रहे हैं।

माता यशोदा ने कृष्ण को उबटन लगाकर नहलाया है और उन्हें सुंदर वस्त्र और आभूषणों से सजाया है। इस खुशी के अवसर पर वे ब्राह्मणों को दान दे रही हैं और उनसे कृष्ण के मंगल की शुभकामनाएँ ले रही हैं।

माता कृष्ण के माथे पर तिलक लगाती हैं, उनकी नजर उतारती हैं और उनकी आरती करती हैं। वे बार-बार अपने लाडले की बलैयां (बुरी नजर से बचाने का भाव) ले रही हैं।

कवि चतुर्भुजदास कहते हैं कि कृष्ण अपने बड़े भाई बलराम और सखाओं (ग्वाल-बालों) के साथ पूरी तरह सज-धज कर तैयार हैं। उनके चेहरों पर गाय चराने जाने का उत्साह और आनंद छलक रहा है।

जब गिरिधर (कृष्ण) वन की ओर प्रस्थान करते हैं, तो उन्हें इस रूप में देखकर ब्रजवासी और स्वयं माता यशोदा भाव-विभोर हो उठते हैं। ब्रजराज कृष्ण का वह मनमोहक मुख देखकर सब निहाल हो जाते हैं।

ग्वालबालों के संग श्री कृष्ण और बलराम गायों को लेकर वन जाते हैं। जैसे ही कृष्ण-बलराम ने वन में प्रवेश किया, वहाँ के वृक्ष फलों और फूलों के भार से झुक गए और प्रभु के चरणों का स्पर्श करने लगे। वन के पक्षी, भँवरे और पशु मधुर ध्वनि में भगवान के यश का गान करने लगे। दिन भर सभी ग्वालबालों ने तरह-तरह के खेल और क्रीड़ाएं की। कृष्ण ने वन के जीवों की नकल उतारकर अपनी लीलाएं दिखाई। उन्होंने हंसों की तरह कुहकना, मोरों की तरह नाचना और बादलों की गंभीर गर्जना जैसी आवाज़ में दूर गई गायों को उनके नाम से पुकारना शुरू किया, जिससे सभी गोप और गायें मंत्रमुग्ध हो गए।

दिनभर गायों के पीछे चलने और उनके खुरों से उड़ने वाली धूल से कृष्ण का शरीर ढ़क गया था। संध्या समय गोधूली वेला में जब वे लौटे, तो उनके मोरपंख वाले मुकुट और घुंघराले बालों पर गायों के खुरों की गोधूली व चेहरे पर पसीने की बूंदें एक दिव्य श्रृंगार की तरह लग रही थी।

ग्वालबालों और कृष्ण-बलराम का उनके परिजन इंतजार कर रहे थे। जब वे लौटे तो ब्रजवासी उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें अच्छी प्रकार से नहलाकर भोजन प्रसाद करवाया और थके हुए थे इसलिये आराम से सुला दिया।

इस प्रकार श्री कृष्ण की पीले दिन की गोचारण लीला सम्पन्न हुई। अब वे ग्वालबालों के संग प्रतिदिन ब्रज से दूर अलग-अलग वनों में गायों को चराने जाते और तरह-तरह की लीलाएं करने लगे।

कृष्ण के प्रिय सखा श्रीदामा और अन्य ग्वाल-बालों ने एक दिन बलराम और कृष्ण से कहा कि पास ही एक बहुत बड़ा तालवन है। वहाँ ताड़ के वृक्षों पर अत्यंत स्वादिष्ट और सुगंधित फल लगे हैं, लेकिन वहाँ कोई जा नहीं पाता क्योंकि वहाँ धेनुकासुर नाम का एक पराक्रमी दैत्य रहता है।

धेनुकासुर गधे (खर) के रूप में रहता था। वह इतना बलवान और दुष्ट था कि उसने अपने साथियों के साथ उस वन पर कब्जा कर रखा था। उसके डर से मनुष्य तो क्या, पशु-पक्षी भी उस वन में जाने से डरते थे।

सखाओं की इच्छा पूरी करने के लिए कृष्ण और बलराम तालवन पहुँचे। बलराम जी ने अपनी भुजाओं से ताड़ के वृक्षों को हिलाना शुरू किया, जिससे पके हुए फल जमीन पर गिरने लगे। फलों के गिरने की आवाज सुनकर धेनुकासुर क्रोधित होकर वहाँ पहुँचा। धेनुकासुर ने सबसे पहले बलराम जी पर हमला किया। उसने अपने पिछले पैरों से बलराम जी की छाती पर प्रहार किया। बलराम जी ने हंसते हुए उसे एक हाथ से पकड़ा, हवा में गोल-गोल घुमाया और उसे एक बड़े ताड़ के वृक्ष पर दे मारा। वह दैत्य

वृक्ष से टकराते ही प्राणहीन हो गया। धेनुकासुर के मरते ही उसके अन्य असुर साथी (जो गधों के रूप में ही थे) कृष्ण और बलराम पर टूट पड़े। कृष्ण और बलराम ने खेल-खेल में ही उन सभी को पकड़कर वृक्षों पर दे मारा और पूरे वन को असुरों से मुक्त कर दिया। इस लीला के बाद ब्रजवासी निर्भय होकर तालवन के फलों का आनंद लेने लगे। जब श्री कृष्ण शाम को वन से लौटे, तो माता यशोदा ने उनका दिव्य अभिषेक किया और उनकी नजर उतारी।

कालिया नाग के यमुना नदी में निवास करने के कारण उसका जल इतना विषैला हो गया था कि उसके ऊपर से उड़ने वाले पक्षी भी गिरकर मर जाते थे। भयंकर गर्मी में एक दिन खेलते-खेलते ग्वाल-बाल और उनकी गायें यमुना के विषैले जल को पी गये। इससे वे प्राणहीन होकर गिर पड़े। तब श्रीकृष्ण ने अपनी अमृतमयी दृष्टि डालकर उन सभी को पुनः जीवित कर दिया।

यमुना को शुद्ध करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण कदम्ब के वृक्ष से नदी के जहरीले पानी में कूद गए। जैसे ही श्रीकृष्ण जल में उतरे, कालिया नाग ने उन्हें अपनी कुंडलियों में जकड़ लिया। यह देख यमुना किनारे खड़े यशोदा माता, नंद बाबा और सभी ब्रजवासी अत्यंत व्याकुल हो गए। श्रीकृष्ण ने अपना शरीर विशाल कर नाग की पकड़ ढ़ीली की और उसके फनों पर चढ़कर दिव्य नृत्य करने लगे। उन्होंने नाग के प्रत्येक उस फन को कुचल दिया जो अहंकार से ऊपर उठता था, जिससे नाग का सारा विष और अभिमान चूर-चूर हो गया।

जब कालिया नाग अधमरा हो गया, तब उसकी पत्नियों (नाग-पत्नियों) ने श्रीकृष्ण से उसके प्राणों की भिक्षा मांगी। श्रीकृष्ण ने उसे क्षमा कर दिया और आदेश दिया कि वह तुरंत यमुना छोड़कर अपने मूल स्थान रमणक द्वीप चला जाए। कालिया को गरुड़ से भय था, इसलिए श्रीकृष्ण ने उसे आश्वासन दिया कि उसके मस्तक पर प्रभु के चरणों के निशान देखकर गरुड़ उसे कोई हानि नहीं पहुँचाएगा। इस प्रकार श्रीकृष्ण ने यमुना को प्रदूषण मुक्त किया और ब्रज के समस्त प्राणियों की रक्षा की।

ब्रजवासी बहुत थक गये थे इसलिये उस रात गायों सहित यमुना किनारे रुक गये। रात को वहाँ जंगल में भयंकर आग लग गई। सबने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की। प्रभु ने पलभर में दावानल को पी लिया।

प्रलम्बासुर असुर कंस का एक अनुचर था, जिसे श्रीकृष्ण और बलराम को मारने के लिए भेजा गया था। एक बार श्रीकृष्ण, बलराम और उनके सखा वन में खेल रहे थे। उन्होंने दो टीमें बनाई और शर्त रखी कि हारने वाली टीम के खिलाड़ी जीतने वाली टीम के खिलाड़ियों को अपनी पीठ पर लादकर निश्चित दूरी तक ले जाएंगे। प्रलम्बासुर एक ग्वाले का रूप धरकर उनके बीच शामिल हो गया जिसकी जानकारी श्रीकष्ण को हो गई लेकिन वे कुछ बोले नहीं, वे मौके की तलाश में थे।

वह असुर श्रीकृष्ण की शक्ति से परिचित था, इसलिए उसने बलराम जी को निशाना बनाने की योजना बनाई। खेल के दौरान प्रलम्बासुर (जो हारने वाली टीम में था) को बलराम जी को अपनी पीठ पर उठाना पड़ा। बलराम जी को पीठ पर बिठाकर वह उस स्थान से बहुत दूर भागने लगा जहाँ उसे रुकना था। जब बलराम जी को संदेह हुआ, तो असुर ने अपना विशाल और भयानक रूप धारण कर लिया। वह आकाश मार्ग से उन्हें लेकर भागना चाहता था। पहले तो बलराम जी थोड़े चकित हुए, लेकिन फिर उन्होंने अपनी मुष्टि (मुक्के) से असुर के सिर पर भीषण प्रहार किया। उस एक ही चोट से प्रलम्बासुर का सिर फट गया, वह रक्त वमन करने लगा और प्राणहीन होकर गिर पड़ा। इस प्रकार बलराम जी ने प्रलम्बासुर का वध कर ग्वाल-बालों को भयमुक्त किया। ....शेष अगले अंक में

श्री राम कथा

(पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज)

श्री राम पंचायती मंदिर संगरिया

पिछले अंक से आगे........

.........साधु समाज के संगम को तीर्थराज (प्रयाग) के समान माना गया है, जहाँ श्रद्धा की गंगा और भक्ति की यमुना का मिलन होता है। जैन परंपरा में भी साधु वंदना (लघु, मध्यम और बड़ी) के माध्यम से मुनियों के संयम, त्याग और आत्मशुद्धि के मार्ग की स्तुति की जाती है।

साधु चरित सुभ चरित कपासू।
नीरस बिसद गुणमय फल जासू।।

साधू चरित्र अद्भुत होता है। साधु चरित्र को नीरस कहा है, विषाद कहा और गुणमय कहा है। साधु चरित्र कपासु की तरह है। साधु चरित्र में आपको रस मिल जाए कहना कठिन है पर नीरस होकर के भी वह गुणमय और विषाद है और सुंदर फल देने वाले कपास जिसे रुई कहते हैं, कपास में रस नहीं है। जब तक रस होता है तब तक तंतु नहीं बनते। कपास जब पूर्णतया सूख जाता है उसके बाद उनके धागे तैयार होते हैं। निरस होने के बाद गुण उसमें प्रकट होता है। **नीरस बिसद गुणमय फल जासू** वह कपास जैसे नीरस होने पर विषद गुण को प्रकट करता है और आप जानते हैं। कपास हम लोगों के अंग को ढ़कने के लिए कितनी अवस्थाओं को पार करते हैं, कैसे-कैसे उनकी दशा होती? कपास खेत से लाया गया, सुखाया गया, धुना गया, तीरा गया, तारा गया और उसके बाद तंतु बनाया गया। उसके बाद बुनकरों के कांटे चुभे हैं और उन कांटों को चुभ-चुभ कर के वह वस्त्र के रूप में परिणित हुए हैं और आज हो क्या रहा है? हम लोग पीतांबर धारण करते हैं, अमुक-अमुक वस्त्र धारण करते हैं। आपने इसके मूल में कभी चिंतन किया? आपने तो हजार-दो हजार दिए और मखमल का अपना रजाई खरीद लिया पर इसकी गति कहाँ से है? उस पौधों से चलिए जहाँ यह फला होगा, उस धुनिया से जिन्होंने धुना है, उस बुनकर से जिन्होंने बुना है, चलते-चलते कितनी अवस्था पार किया? इसलिए नीरस बिषद गुण फल जासु, साधु चरित का वर्णन करना बहुत कठिन होगा जो धुनकर, चुनकर, बुनकर और बुद्ध होकर के वस्त्र बनते हैं, हम सबको ढ़क रखे हैं। ऐसे हजारों साधु समाज कल्याण के लिए चादर बने होते हैं।

मुद मंगलमय संत समाजू।
जो जग जंगम तीरथराजू।।
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा।
सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा।।

तुलसीदास जी कहते हैं कि संतों का समाज आनंद और कल्याणमय है, जो इस संसार में चलता-फिरता तीर्थराज प्रयाग है। जिस प्रकार प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है, वैसे ही इस संत-समाज रूपी तीर्थराज में। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय। ऐसा महिमामय भगवान का पावन चरित्र है। कहा, हम सब संत समाज का वर्णन किए हैं।

विधि निषेधमय कलिमल हरनी।
करम कथा रबिनंदनि बरनी।।

जिस प्रकार प्रयागराज में गंगा और सरस्वती के साथ यमुना जी का संगम है, वैसे ही संतों की संगति में कर्मो का वर्णन (क्या शुभ है और क्या अशुभ) यमुना जी की धारा है। यह धारा कलियुग के पापों को धो देने वाली है।

यह जो मानस गंगा की बात हम कर रहे थे इसका त्रिवेणी का रूप दिया है मानसकार ने। ये जो तीन धारा- मुद मंगलमय संत समाजू जो जग जंगम तीरथ राजू। संतों का समाज कभी मिल जाए तो जानो कि माघ का महीना आ गया। बोलो भक्त वत्सल भगवान की जय। मकर की संक्रांति लग गई

14 जनवरी आ गया। जहाँ संत मिल जाए सोचो आज मकर संक्रांति है, क्योंकि मकर की संक्रांति में लोग प्रयाग मेला में जाते हैं। मुद मंगलमय संत समाजू जो जग जंगल तीर्थ राजू। यह संत समाज क्या है? चलते फिरते प्रयाग है, चलते फिरते प्रयाग। स्थाई प्रकृति वाले तो प्रयाग है ही पर जो यहाँ से 700-800 किलोमीटर दूर से चलकर आते हैं और कभी भी हम जाएंगे इतना चल कर जाना होगा और आज हम जाएंगे भी नहीं जब तक कि माघ का मेला ना आ जाए पर यह संत समाज रूपी जो प्रयाग है ये चलकर भी आ जाते हैं। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

यह जो संत समाज रूपी जो प्रयाग है, इसमें तो त्रिवेणी नहीं होगा? हाँ हैं ना। वहाँ तो प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलन है। ये तीन नदियों मिलकर संगम बना है। तो संत समाज में तीन धाराएं क्या होगी?

राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा।
सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा।।

सुरसरि धारा (गंगा) उस संत समाज रूपी प्रयागराज में श्रीराम की भक्ति ही गंगा जी की पवित्र धारा है। ब्रह्मविचार (परमात्मा के स्वरूप का चिंतन) का प्रसार ही वहाँ गुप्त रूप से बहने वाली सरस्वती नदी है। जहाँ संत लोग भगवान के चरित्र का गान करेंगे, समागम होगा वहाँ भक्ति की धारा बहेगी। राम भगवान के चरित्र का वर्णन होना जहाँ आरम्भ होगा वहाँ जाने गंगा की धारा फूट गई है और सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा, सरसइ मतलब सरस्वती। तो सरस्वती की धारा क्या है? सरस्वती लीन है, दिखती ही नहीं है, गुप्त है। ब्रह्म विचार चूंकि गुप्त है, दिखते नहीं है। व्यास जी ने ब्रह्म सूत्र लिखा, बड़ा गुप्त है। इसलिये सरस्वती की धारा इस कथा में छुपी हुई है। कथा की प्रभावी धारा में कभी-कभी ब्रह्म विषयक विचार भी प्रकट होंगे हम निवेदन भी करेंगे, निरूपण भी करेंगे। तो सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा, कहा फिर जमुना कहाँ गई? इस कथा गंगा में, कथा त्रिवेणी में कथा संगम में, कथा प्रयाग में हमारी जमुना माता कहाँ है? कहा इसमें यमुना जी है। बोले वह कहाँ?

बिधि निषेधमय कलिमल हरनी।
करम कथा रबिनंदनि बरनी।।
हरि हर कथा बिराजति बेनी।
सुनत सकल मुद मंगल देनी।।

वेदों में बताए गए- क्या करना चाहिए (विधि) और क्या नहीं करना चाहिए (निषेध) रूपी कर्मो का वर्णन किया गया है। यह कर्म कथा कलियुग के पापों (मल) को नष्ट करने वाली है। भगवान की कथा धारा में संतों के द्वारा कुछ विधियां बताई जाती है यह विधि है- यह करना चाहिए, यह करना चाहिए, यह करना चाहिए और कुछ निषेध किया जाता है- यह नहीं करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिये, यह नहीं करना चाहिये।

कर्मवाद में विधि और निषेध है। कुछ करने योग्य कर्म है, कुछ नहीं करने योग्य कर्म है। तो करने योग्य कर्मो को प्रतिपादित करना और न करने योग्य कर्मो को निवेदन करके त्याग कराना, उसमें दोष दर्शन करवाकर कि इस कर्म में यह दोष है या अनर्थ है, यह पाप है तो उनको पाप मूलक चिंतन कराके उसका त्याग करवाना है। ऐसे ही जो करने याकग्य कर्म है उनकी अच्छाइयों, उनके गुण, करने से होने वाले पुण्य का दर्शन करवाकर उनको ग्रहण करवाएं। तो विधि निषेध में- करम कथा रबिनंदनि बरनी जमुना जी की धारा है। ब्रह्म विचार सरस्वती की धारा और भगवान श्री सीताराम जी के मंगलमय चरित्र गंगा जी की धारा- यह तीनों धाराएं हैं।

हे हरिभक्तों! इस त्रिवेणी में आप कभी गए हों तो वहाँ बेणी माधव भगवान हैं। तो यहाँ बेणी माधव भगवान क्या होंगे या बेणी क्या होंगे? यहाँ अक्षय वट क्या होगा? हे भक्तों! अब ध्यान दीजिये।

बटु बिस्वास अचल निज धरमा ।
तीरथराज समाज सुकरमा।।
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा ।
सेवत सादर समन कलेसा।।

अपने धर्म में जो अटल विश्वास है, वह अक्षयवट है और शुभ कर्म ही उस तीर्थराज का समाज है। वह सब देशों में, सब समय, सभी को सहज ही में प्राप्त हो सकता है और आदरपूर्वक सेवन करने से क्लेशों को नष्ट करने वाला है।

हमारे जीवन में हमारी परंपरा, हमारे गुरु परंपरा हमारे, हमारी कालिंग परंपरा से जो धर्म हमें प्राप्त है उसमें अचल विश्वास होना ही हमारे जीवन का अक्षय वट है। अक्षय वट (अविनाशी बरगद) एक अत्यंत प्राचीन और पवित्र वृक्ष है जिसका हिंदू, जैन और बौद्ध धर्मो में गहरा आध्यात्मिक महत्व है। अक्षय का अर्थ है जिसका कभी क्षय या नाश न हो। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, प्रलय के समय जब पूरी पृथ्वी जलमग्न हो जाती है, तब भी यह वृक्ष सुरक्षित रहता है और इसके एक पत्ते पर भगवान विष्णु बाल रूप में शयन करते हैं।

भारत में कई स्थानों पर अक्षय वट के होने की मान्यता है, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. प्रयागराज (उत्तर प्रदेश): यह प्रयाग संगम तट पर स्थित है और सबसे प्रसिद्ध अक्षय वट माना जाता है। यह वर्तमान में इलाहाबाद किले के भीतर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि संगम स्नान के बाद इसके दर्शन से ही तीर्थ यात्रा पूर्ण होती है।

2. गया (बिहार): विष्णुपद मंदिर के पास स्थित इस वट वृक्ष के बारे में माना जाता है कि माता सीता ने इसे अमर रहने का आशीर्वाद दिया था। यहाँ पितृ पक्ष के दौरान पिंडदान की रस्म पूरी की जाती है।

3. कुरुक्षेत्र (हरियाणा): ज्योतिसर में स्थित इस अक्षय वट को महाभारत युद्ध का साक्षी माना जाता है, जहाँ भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था।

4. शुक्रताल (मुजफ्फरनगर): यहाँ एक लगभग 5100 वर्ष पुराना वट वृक्ष है, जिसके नीचे बैठकर ऋषि शुकदेव ने राजा परीक्षित को श्रीमद्‌भागवत पुराण की कथा सुनाई थी।

अक्षय वट किसी काल में डूबता नहीं, प्रलय में भी सुरक्षित होता है, ऐसे ही जीवन के अनेकों झंझावातों में भी धर्म का जो त्याग न करें, *वह धर्म उनका अक्षय वट है।* **बटु बिस्वास अचल निज धरमा** अपने निज धर्म में इतना अटूट विश्वास हो कि हर काल में किसी काल में वह छाया में डूबे नहीं और निरंतर प्रकाशित हो और अब– **तीर्थराज समाज सुकरमा**। प्रतिदिन जो सत्कर्म हम करते हैं, नित्य नित्य सत्कर्मो का जो समूह जीवन में जुड़ रहा है जैसे– आज तीर्थ आए संतों की सेवा की, गोमाता की सेवा की, ब्राह्मणों की सेवा की, गंगा स्नान किया, सज्जनों के साथ संभाषण किया यह सत्कर्म का समूह है। ऐसे सत्कर्मो का समूह जो है यही तीर्थराज का समाज है।

हे हरिभक्तों! **अकथ अलौकिक तीर्थराऊ। देह सद्य फल प्रगट प्रभाऊ।** यह कथा गंगा रूपी तीर्थराज अलौकिक और अकथनीय है एवं तत्काल फल देने वाला है। तत्क्षण इसका फल प्राप्त होता है।

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग।।

जो मनुष्य इस संत समाज रूपी तीर्थराज का प्रभाव प्रसन्न मन से सुनते और समझते हैं और फिर अत्यन्त प्रेमपूर्वक इसमें गोते लगाते हैं, वे इस शरीर के रहते ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष– चारों फल को पा जाते हैं। इन कथाओं को हम सब सुनें, समझें, आदर पूर्वक इसमें मज्जन करे या जिन्होंने ऐसा भाव बनाया उनको चार फल अभी मिलेगा कल नहीं। लहहिं चारी फल अक्षत तन छूटने से चौथा फल मिलता है ऐसा सुनते हैं। तीन फल तो लोक में है– धर्म बढ़ेगा............

शिव महापुराण कथा

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

...........भैया पान है तो मुँह में कान में नहीं है लेकिन अगर मुँह पान से भरा होगा तो शिव नाम कहाँ विराजमान होगा बताओ। शिव नाम को विराजित करना है इसलिए हमारी वाणी इन सब व्यसनों से रिक्त रहनी चाहिए ताकि हमारी वाणी पर शिव नाम प्रतिष्ठित हो जाए। जय जय शिव शम्भु, हर हर महादेव.... और अंत में यह कि कथा में व्रत कैसा रहेगा? यहाँ आकर व्रत करें? नहीं, कथा आराम से अच्छे से सुन सकें ऐसा भोजन प्रसाद करना चाहिये।

करुणा निधान! इस प्रकार श्रवण की विधि बताई है और फिर उसके बाद में भैया विद्येश्वर संहिता जो है वह प्रारंभ होती है।

धर्मक्षेत्रे महाक्षेत्रे गंगाकालिन्द्योः संगमे।
प्रयागे परमे पुण्ये ब्रह्मलोकस्य वर्त्मनि ।।

धर्म के महान क्षेत्र (महाक्षेत्र) प्रयाग में, जहाँ गंगा और यमुना (कालिंदी) का पवित्र संगम होता है और जो साक्षात् ब्रह्मलोक का मार्ग है, वहाँ मुनियों ने एक विशाल ज्ञान-यज्ञ का आयोजन किया था। प्रयागराज जो महान क्षेत्र है वहाँ पर सब लोग एकत्रित होते हैं और वहीं पर श्री व्यास जी महाराज के मुखारविंद से इस मंगलमय दिव्य शिव महाकथा का, शिव महापुराण का प्रारंभ होता है।

विद्येश्वर संहिता जो कि शिव महापुराण में सात संहिताएं हैं उन संहिताओं में जो प्रथम संहिता है। श्री विद्येश्वर संहिता, जो शिव पूजन के अनेक संशयों को दूर करने वाली संहिता है। कृपानाथ! भगवान शिव स्वयं उपासक हैं, ध्यान से सुनें। भगवान शिव स्वयं उपासक हैं इसलिए उन्हें उनकी प्रसन्नता का जो सबसे उत्तम स्वरूप है वह तो उपासना ही है। जब आप लोग इतने चाव से शिव कथा का आयोजन करवा रहे हैं तो मुझे भी लगा कि भाई मेरा भी कर्तव्य है कि मैं भी आप लोगों को पूरे चाव से सुनाऊँ। वक्ता दो ही काम कर सकता है- या तो अच्छे से सुना सकता है या फिर आप लोगों को अच्छे से सुला सकता है। तो मैंने सोचा कि मैं भी अच्छे से, चाव से सुनाऊँ। तो मैं भी सुबह-सुबह थोड़ा आप लोगों की सेवा अच्छे से कर सकूं इसके लिए ग्रंथ को कुछ-कुछ देखता रहता हूँ। पढ़ना तो ढ़ंग से नहीं आता है, पर देखता रहता हूँ। अचानक कोई आता है और देखता है तो उसे लगे कि वाह! महाराज तो बहुत अध्ययन कर रहे हैं, तो प्रभाव पड़ता है। सामने वाले को लगता है कि हाँ भाई मेहनती महाराज है।

तो समूह में जो प्रतिदिन शिव महापुराण के संदेश प्रसारित होते हैं मुझे भी वह संदेश पढ़ने को मिलते हैं तो उसमें आज बहुत आग्रह किया गया था कि सब लोग जरूर आएं क्योंकि शिव पूजन का विशेष स्वरूप हमको सुनने को मिलेगा। ठीक है पूजन आदि के विषय की चर्चा करूंगा, लेकिन आज मैं आपको शिव पूजन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत बताने जा रहा हूँ जो शायद आप लोगों ने पहले ना भी सुना हो। खैर, उसके पहले मैं आज आपको मेरे माथे के जगन्नाथ जी के ऊपर लगे हुए मोर पंख का रहस्य बताता हूँ।

इधर क्षेत्र में मेरे प्रति सद्भाव रखने वाले और मुझे खूब प्रेम देने वाले मेरे कुछ युवा भाई हैं जो गोसेवा भी करते हैं और अन्न दान की सेवा भी करते हैं। उन्होंने आज यहाँ मोर पंख की एक अनुपम भेंट मुझे दी जो मेरे पोथी के समीप श्री अर्धनारीश्वर नर्मदेश्वर विराज रहे हैं वह भी उन्होंने मुझे कल प्रदान किये। तो सुनिए! यह एक पर्ची दी है, इसमें क्या है इसमें कुछ मेरे विषय में भी लिखा है वह तो मैं अपने मुंह से नहीं बोलूं तो ठीक है, पर चलो बोल ही देते

हैं क्या फर्क पड़ता है। उन्होंने लिखा है प्यारे महाराज जी! जब आप कथा में सजे धजे शांत सौम्य रूप में पधारते हैं तो मन में वही भाव उभर आता है जैसे मां यशोदा ने अपने लाला को काजल की बिंदी लगाकर मोर पंख सजा कर अपने हाथों से तैयार कर प्रभु नाम कीर्तन और कथा में भेजो हो। इसी प्रेम पूर्ण वातावरण में कथा सुनते हुए हृदय में भगवान शिव और श्री कृष्ण का वह विलक्षण प्रसंग जाग उठा जब भगवान शिव गोपी रूप में श्री कृष्ण की सेवा में सम्मिलित हुए। प्रभु के संग में प्रवेश का एकमात्र द्वार प्रेम है और भगवान शिव ने यहाँ स्वयं सिद्ध किया।

यही वह क्षण था जब भीतर एक छवि आकार लेने लगी भगवान गोपेश्वर महादेव। श्री कृष्ण के मोर पंख पर विरातिज है। यह कोई कल्पना नहीं यहाँ तो भाव की चुप साधना थी जो रंगों और रेखाओं से नहीं भक्ति और स्मरण से बनी। इसलिए हमने गोपेश्वर महादेव को श्री कृष्ण के मोर पंख में स्थित करते हुए एक चित्र रचा जो केवल एक चित्र नहीं शिव और कृष्ण के अद्वैत प्रेम का प्रतीक है और यह कोमलतम भाव मन में जगा। तो यह मोर पंख खाली एक अलंकरण नहीं है बल्कि शिव कथा की चेतन्यता का मुकुट है ऐसा। तो करुणा निधान! भगवान शिव की उपासना का एक अद्भुत सूत्र आज मेरे हाथ में लगा।

एक नई बात और बताता हूँ। लोग कहते हैं कि ये जो मारवाड़ी लोग होते हैं ना ये बताए हुए दाम में कोई चीज लेते नहीं है। उसको कम, कम, कम करवाते हैं। ऐसे ही एक बार एक दुकान पर एक मारवाड़ी रुमाल लेने गया। उसने कहा भाई साहब रुमाल कैसे दिया। दुकानदार ने कहा 10 रु. में एक। मारवाड़ी भाई ने कहा 10 रु. बहुत ज्यादा है, कुछ तो कम करिए। उसने कहा भाई साहब आप ऐसा करिए अपनी ओर से अब क्या करूं 9 रु. दे दीजिए, 1 रु. आपके लिए छोड़ देता हूँ। ऐसे तो नहीं भाई 1 रु. क्या कम किया, थोड़ा और कम करो। दुकानदार ने कहा इससे कम तो मुझे पूरा नहीं पड़ेगा। नहीं-नहीं कुछ तो कम करिए। उसने कहा भाई साहब आपको जब लेना ही नहीं है तो क्यों आप मेरा समय खर्च कर रहे हैं। मारवाड़ी बोला- दुकान पर आया हूँ कुछ तो लेना है तभी आया हूँ, ऐसे ही समय थोड़े ही खराब कर रहा हूँ। चलो आप ज्यादा ही पीछे पड़ रहे हो तो 5 रु. दे दीजिये। मारवाड़ी बोला भाई साहब 5 रु. तो इसका मूल्य था, अब इसमें से कितना कम करोगे। समझो भाई साहब, इससे कम में नहीं दे सकता, आपकी इच्छा हो तो लो, नहीं तो कोई बात नहीं। नहीं नहीं भाई साहब कुछ तो कम करना होगा, यह रेट बहुत ज्यादा है। इस पर परेशान होकर दुकानदार बोला- आप फ्री ले जाओ। मारवाड़ी बोला- तो 2 दे दो फिर तो।

जैसे व्यक्ति वस्तु के दाम कम करवाता है ऐसे ही व्यक्ति बुरा न माने भक्ति में भी सोचता है कि कुछ कम करना पड़े और फल पूरा मिल जाए। सोचता है एकादशी का व्रत करना ही चाहिए उसका बहुत महत्व है, लेकिन फिर भी कई लोग पूछते हैं महाराज ऐसा कोई उपाय है क्या कि साल में एक करने से ही 24 एकादशी का फल मिल जाए। ऐसा हो जाए कम से काम में, काम से काम में कैसे हो। महाराज मंत्र बहुत बड़ा है, रोज इसकी 10 माला, 20 माला जपते तो समय बहुत लग जाता है कोई और ऐसा छोटा मंत्र बताओ ना कि थोड़े समय में इतना ही फल मिल जाए। फल इतना ही मिले और जप कम करना पड़े।

मेरे भी यह कथा सुनने वाले ज्यादातर ऐसे ही मारवाड़ी, राजस्थानी भाई हैं। इसलिए मैंने विचार किया कि इनको जब मैं शिव पूजन के बड़े-बड़े प्रकार बताऊँगा तो कथा पूरी होने के बाद फिर मेरे पास आयेंगे और कहेंगे महाराजजी, ऐसा कोई प्रयोग है क्या शिव पूजन का कि समय कम लगे और फल

उतना ही मिल जाए। इसलिये मैंनं मथ-मथकर, मथ-मथकर देखा कि ऐसा एक प्रयोग है जिससे शिव की राजोपचार, पंचोपचार, छोड्सोपचार, दिव्यो उपचार, देवोपचार, देवोपचार यानि देवताओं के द्वारा सिद्ध की गई, देवताओं के द्वारा तैयार की गई सामग्रियों से परमात्मा शिव का पूजन करना। इन समस्त उपचारों का अगर कोई एक साररूप उपचार है वह मुझे आप सबके आगे परोसना है।

तो उस प्रकरण में यहाँ उपस्थित हुए स्वरूप का एक उदाहरण देता हूँ। संध्या के समय पिताजी घर आते हैं आज के समय की बात नहीं करते, आज से कई बरसों पहले की जब आपके पिता आदि रहते थे। जब पिता संध्या के समय अथवा रात्रि के समय घर में बैठकर के अपनी दुकान का जमा खर्च खाते को व्यवस्थित करते हैं। तो ऐ पीले कागज और लाल जिल्द की बही होती थी उसमें पिताजी कुछ लिखते रहते। तब मां अपने पुत्र को कहती कि जा तूं भी अपनी पुस्तक लेकर उनके समीप बैठ जा। पुत्र कहता माँ उससे क्या होगा? माँ कहती कैसे भी बैठ भले ही तो उल्टी लेकर बैठ जा, किताब तुझे अगर पढ़ने का मन नहीं है तो तू किताब उल्टी लेकर ही बैठ जा पर जिस समय वे यह हिसाब कर रहे होते हैं उस समय तूं दूसरा कुछ काम मत कर उनके समीप इस तरह से बैठ जा। इससे क्या होगा? इससे उनको प्रसन्नता होगी। क्यों प्रसन्नता होगी? जब वे भोजन कर रहे हो और तब तुम उनके पास किताब लेकर बैठोगे तो उनको अच्छा नहीं लगेगा। लेकिन जब वे स्वयं भी इसी प्रकार अपना कार्य कर रहे हैं और तुम भी उस समय इसी प्रकार बैठोगे तो उनको प्रिय लगेगा।

कृपानाथ! इसी दृष्टांत को आप शिव उपासना में घटाइये, शिव पूजन में घटाइये, भगवान शिव का जो शिवलिंग स्वरूप है वह उपासनात्मक ही विशेष रूप से है। भगवान शिव ने यहाँ एक लिंग का आकार मात्र रखा है हमारे सामने बाकि अपने स्वरूप को समेट रखा है। उन्हें हाथों से कुछ करना नहीं है इसलिए हाथ दिखते नहीं है, उनको नेत्रों से कुछ करना नहीं है इसलिए नेत्र दिखते नहीं है, उनको होठों से कुछ करना नहीं है इसलिए होठ दिखते नहीं है, उनको उदर से कुछ करना नहीं है इसलिए उनका उदर दिखाता नहीं है, उनको पांवों से कुछ करना नहीं है इसलिए पांव दिखते नहीं है, उन्हें मंत्र स्मरण करना है उन्हें मात्र ध्यान करना है ऐसा भगवान शिव का स्वयं का उपासक स्वरूप है।

तो कृपानाथ जिनको वास्तव में शिव को प्रसन्न करना हो और उनको शिव को प्रसन्न करने का सबसे उत्तम से उत्तम, मतलब सबसे उत्तम और सबसे सरल कोई एक ही साधन है जानना है तो जब भी आप शिवालय में जाएं बस दो-तीन घड़ी के लिए शांति से बैठ जाएं और अपने अंत:करण में अपने को प्रिय लगने वाले कोई भी भगवान के नाम का, कोई भी शिव नाम का उच्चारण करते हुए अपने नेत्रों की की क्रिया को भूल जाएं, अपने पांवों की क्रिया को भूल जाएं, अपने पेट की क्रिया को भूल जाएं और पूरा ध्यान बस उस नाम पर केंद्रित कर दें। भगवान शिव इससे ज्यादा और कोई दूसरी पूजा से प्रसन्न नहीं हो सकते।

जल भगवान शिव को चढ़ाना चाहिए लेकिन उत्तम जल न मिले तो क्या करें? अभी कुछ समय पहले मैं एक प्रदेश गया था, तो वहाँ पर किसी ने मुझे बताए कि देखिए कितने सारे बाग बगीचे लगे हैं। हमने कहा- इतना पानी तो इस देश में नहीं है, यह बाग बगीचों को पानी कहाँ से मिलता है? तो उन्होंने कहा कि जो शौचालय में मल मूत्र में जो जल जाता है उसी को वे लोग ऐसा तैयार करके और ऐसा बना देते हैं कि वह इनमें चल जाता है और बड़े-बड़े महानगरों में भी इस प्रकार का व्यवहार होता है। वैष्णव मार्ग में वैष्णवों को निवेदन करते हैं आचार्य स्वरूप कि नल का पानी सेवा में काम मत लो तो उसके पीछे भी यही कारण है............

राजा जनक को नरक के दर्शन क्यों हुए?

(संकलित)

राजा जनक एक अत्यंत धर्मात्मा और ज्ञानी राजा थे, जिन्हें 'विदेह' कहा जाता था। उन्हें 'विदेह' इसलिए कहा जाता था क्योंकि वे शरीर के सुख-दुख से ऊपर उठ चुके थे और स्वयं को केवल एक आत्मा (ब्रह्म) के रूप में देखते थे। राजा जनक का जीवन कर्मयोग का एक आदर्श उदाहरण माना जाता है। वे मिथिला के राजा होते हुए भी एक ऋषि जैसा संयमित और अनासक्त जीवन जीते थे, जिसके कारण उन्हें राजर्षि कहा जाता है। यद्यपि वे महल में रहते थे और राजसी वस्त्र धारण करते थे, लेकिन आंतरिक रूप से वे सांसारिक सुखों से पूरी तरह विरक्त थे। वे अपनी प्रजा को संतान की भाँति मानते थे और धर्म के मार्ग पर चलते हुए न्यायपूर्वक शासन करते थे। उनके राज्य में कोई ईर्ष्या या द्वेष नहीं था और मिथिला उनकी देखरेख में बहुत समृद्ध थी। प्रजा के कर से वे राज्य चलाते थे, अपने परिवार का पालन पौषण करने के लिये वे स्वयं खेती करते थे। प्रजा के कर का एक टका भी अपने लिये व्यय नहीं करते थे। वे महान पुण्यात्मा थे और परम रामभक्त थे।

आयु पूरी होने पर उन्होंने योगबल से देह का त्याग किया और बेकुण्ठ से विमान उनको लेने आया। विमान जब राजा जनक के सूक्ष्म शरीर को लेकर जा रहा था और नरक (कालपुरी) के पास पहुँचा, तो वहाँ भयानक चीख-पुकार मची थी और पापी प्रताड़ित हो रहे थे। जैसे ही राजा जनक के शरीर को स्पर्श कर बहने वाली हवा नरक के निवासियों तक पहुँची, उन्हें अपनी पीड़ा में आराम मिला। नरक की अग्नि उनके लिए शीतलता में बदल गई। जब जनक वहाँ से जाने लगे, तो नरक के वासियों ने उनसे रुकने की प्रार्थना की। दयालु राजा ने सोचा कि यदि मेरी उपस्थिति से यहाँ के दुखियों को सुख मिल रहा है, तो यही मेरे लिए स्वर्ग है। उन्होंने वहीं ठहरने का निश्चय किया। यमराज (धर्मराज) वहाँ प्रकट हुए और उन्होंने राजा से कहा कि आपने कोई पाप नहीं किया है, इसलिए आप स्वर्ग पधारें। तब जनक ने उन पापियों की मुक्ति का उपाय पूछा। यमराज ने बताया कि यदि राजा अपने पुण्यों का एक अंश इन आत्माओं को दे दें, तो ये मुक्त हो सकते हैं। राजा जनक ने अपने जीवन के संचित पुण्य 'राम नाम के जप का फल' उन सभी को दान कर दिया, जिससे नरक खाली हो गया और सभी आत्माएं दिव्य शरीर धारण कर स्वर्ग को प्रस्थान कर गई। राजा जनक ने यमराज जी को पूछा कि ये सब तो पापी थे, इसलिये नरक भोगने आये थे, पर हे धर्मराज! मैंने क्या पापकर्म किया जिसके फलस्वरूप मुझे नरक के दर्शन करने पड़े? इस पर यमराज जी ने कहा-

एकदा तु चरन्तीं गां वारयामास वै भवान्।
तेन पाप विपाकेन नरकद्वार दर्शनम्।।

हे राजन्! एक बार आपने चरती हुई गोमाता को रोक दिया था, उस पाप के कारण ही आज आपको नरक देखना पड़ा है। अब आप बैकुण्ठ पधारिये। अंत में, यमराज ने राजा जनक को सादर प्रणाम किया और राजा जनक दिव्य विमान में बैठकर स्वर्ग (वैकुंठ) चले गए।

राजा जनक को नरक क्यों जाना पड़ा? इतने पुण्यात्मा होने के बावजूद उन्हें नरक के द्वार तक इसलिए जाना पड़ा क्योंकि उन्होंने अनजाने में एक छोटा सा पाप किया था। एक बार राजा जनक ने घास चरती हुई एक गाय को रोक दिया था। इसी सूक्ष्म पाप के कारण, जब उन्होंने योग बल से अपना शरीर त्यागा, तो उन्हें स्वर्ग ले जाने वाला विमान सीधे स्वर्ग न जाकर नरक के रास्ते से होकर गुजरा।

पद्मपुराण में वर्णित राजा जनक का प्रसंग

आधुनिक समाज और शासन व्यवस्था के लिए एक अत्यंत गंभीर चेतावनी है। जहाँ विदेहराज जनक जैसे परम ज्ञानी और पुण्यात्मा को मात्र एक चरती हुई गाय को टोकने के अनजाने कृत्य के कारण नरक के द्वार तक जाना पड़ा, वहीं आज की स्थिति भयावह है।

शास्त्रों की चेतावनी और आधुनिक शासकों की नियति:-भारतीय संस्कृति में गौ केवल एक प्राणी नहीं, बल्कि साक्षात् पृथ्वी और देवता का स्वरूप मानी गई है। गाय भगवान की इष्ट है शास्त्रों का उद्घोष हैं 'गावो विश्वस्य मातर:' (गाय विश्व की माता है)। जब एक पुण्यात्मा राजा को एक क्षण के अवरोध के लिए दंड मिला, तो उन लोगों की गति क्या होगी जो गौवंश के विनाश के उत्तरदायी हैं?

(1).**कत्लखानों के लाइसेंस और शासन का पाप**- पद्मपुराण के अनुसार, गौ-हत्या का पाप केवल कसाई को ही नहीं लगता, बल्कि जो उसकी आज्ञा देता है, जो उसमें सहयोग करता है और जो मूकदर्शक बना रहता है, वे सभी समान रूप से नरक के भागी होते हैं। वर्तमान शासक जब आर्थिक लाभ या कूटनीति के नाम पर वधशालाओं के लाइसेंस जारी करते हैं, तो वे अपनी आने वाली पीढ़ियों और स्वयं की आत्मा को 'असिपत्र' जैसे भयानक नरकों की ओर धकेलते हैं। शास्त्र कहते हैं कि जितने रोएं गाय के शरीर पर होते हैं, गौ-घाती उतने ही वर्षो तक 'कुंभीपाक' नरक में सड़ता है।

पातोयति च गां यस्तु वधार्थ यच्छति प्रभो।
स पच्यते महाघोरे नरके रौरवे चिरम्।।

जो व्यक्ति गाय को मारने की आज्ञा देता है या उसे वध के लिए समर्पित करता है, वह अत्यंत भयानक रौरव नरक में युगों तक कष्ट भोगता है। जब एक राजा लाइसेंस देता है, तो वह उस वध का मुख्य प्रेरक (प्रयोजक) बन जाता है।

(2). **गौ-चर भूमि का अपहरण और दंड:**-पुराणों में भूमि दान को महान पुण्य बताया गया है, लेकिन 'गौ-चर' (गाय के चरने की भूमि) को हड़पना सबसे बड़ा अधर्म माना गया है। आज के समय में विकास के नाम पर गौशालाओं की जमीनें और चरगाही भूमियों पर जो कब्जे हो रहे हैं, वे समाज में अकाल, महामारी और अशांति का मुख्य कारण हैं। राजा जनक ने तो केवल गाय को घास खाने से रोका था, आज तो उनके मुँह से निवाला ही छीना जा रहा है।

गाश्चौव भूमिं च तथा विप्रान् च न हिनस्त्यपि।
तद् राष्ट्रं वर्धते नित्यं यत्र धेनुः प्रसीदति।।

जिस राष्ट्र में गायें प्रसन्न रहती हैं, वही राष्ट्र उन्नति करता है। जहाँ गायों की भूमि छीनी जाती है और वे सड़कों पर कचरा खाने को विवश हैं, उस देश के शासकों को 'कुंभीपाक' नरक से कोई नहीं बचा सकता।

(3). **कर्मफल की अकाट्य व्यवस्था :**-पद्मपुराण की यह कथा सिद्ध करती है कि प्रकृति का न्याय तटस्थ है। यदि राजा जनक का तप उन्हें नरक के दर्शन से नहीं बचा पाया, तो आज के भ्रष्ट और गौ-द्रोही शासकों को उनके पद, प्रतिष्ठा या सुरक्षा चक्र कैसे बचा पाएंगे?

शास्त्रों के अनुसार, ऐसे शासकों की गति 'महारौरव' नरक में होती है, जहाँ उन्हें वही पीड़ा सहनी पड़ती है जो एक गाय वधशाला में सहती है।

(4). **निष्कर्ष :**- राजा जनक के प्रसंग से यह स्पष्ट है कि सत्ता का मद और अहंकार पुण्य को क्षीण कर देता है। यदि आधुनिक शासक अपनी 'गति' सुधारना चाहते हैं, तो उन्हें गौ-संरक्षण को केवल चुनावी मुद्दा न बनाकर उसे कर्तव्य मानना होगा। गौ-हत्या का मौन समर्थन करना भी आत्मघाती है। जिस राष्ट्र में गाय का रक्त गिरता है, उस राष्ट्र का वैभव, शांति और आयु स्वत: ही नष्ट हो जाती है।राजा जनक ने तो एक छोटे से पाप के बदले नरक के जीवों का उद्धार कर दिया था, लेकिन आज के शासक जो पाप की गठरी बांध रहे हैं, उन्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा।

गोदान की विधि

(संकलित)

पिछले अंक में हमने गोदान की महिमा के बारे में पढ़ा, उससे आपके मन में यह जिज्ञासा पैदा हुई होगी कि हम भी गोदान करें। शास्त्रों के अनुसार गोदान को सर्वोच्च और मोक्ष प्रदायक दान माना गया है।

गोदान की विधि होती है। उस विधि से किये गये दान का ही फल मिलता है।इसकी शास्त्रीय विधि में गाय के चयन से लेकर दान के संकल्प तक कुछ विशेष नियमों का पालन करना अनिवार्य है। गोदान की मुख्य विधि और शास्त्रों (जैसे महाभारत और गरुड़ पुराण) के अनुसार गोदान की प्रक्रिया इस प्रकार है:

1. गाय का चयन: दान की जाने वाली गाय सवत्सा (बछड़े या बछिया के साथ) और दुधारू होनी चाहिए। वह सुलक्षणा, सुन्दर, स्वस्थ, शांत और किसी भी रोग या अंग दोष से मुक्त होनी चाहिए। गाय दानदाता की स्वयं की या उसकी अपनी ईमानदारी की कमाई से खरीदी गई हो। बूढ़ी, बीमार, अंगहीन, बांझ या न्याय विरुद्ध तरीके से प्राप्त की गई गाय का दान नहीं करना चाहिए। शास्त्र के अनुसार सुनहरे रंग की कपिला गाय का दान विशेष फलदायी होता है।

2. गाय का श्रृंगार: दान से पूर्व गाय का विधिवत श्रृंगार किया जाता है। उसके सींगों को स्वर्ण (सोने) से और खुरों को चांदी से मढ़ना चाहिए। शरीर पर रेशमी या सुंदर वस्त्र ओढ़ाना चाहिये और गले में फूलों की माला पहनानी चाहिये।

3. षोडशोपचार पूजन: गाय को माला पहनाकर अक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य (फल, तांबूल, गुड़) से पूजन किया जाता है।

4. दक्षिणा और सामग्री: गोदान के साथ दशदान की सामग्री जैसे तिल, लोहा, सोना, कपास, नमक, सात प्रकार के अनाज और भूमि का दान भी फलदायी माना जाता है।

5. दान का संकल्प: हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लेकर श्री राधा-माधव की प्रसन्नता और अपने/पूर्वजों के कल्याण हेतु अथवा मन में जो इच्छित कामना हो उसकी पूर्ति के लिये संकल्प लिया जाता है। दान करने के बाद गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी नदी पार करने की प्रार्थना की जाती है।

6. गाय के साथ कांस्य पात्र और दक्षिणा देना: गोमाता के साथ में दुहने के लिये कांस्य पात्र देना चाहिये तथा गोसेवा के लिये ब्राह्मण को दक्षिणा देना चाहिये। अगर गोशाला को गोदान कर रहे हैं तो उसका आजीवन व्यय देना चाहिये तभी उसका अच्छा फल मिलेगा। गोशाला में गोदान के निमित संकल्पपूर्वक उचित राशि देना भी गोदान के समान पुण्यदायी होता है। आजकल गोदान लेने वाले बहुत कम मिलेंगे क्योंकि उनके घरों में गोमाता की सेवा करने वाले नहीं हैं और उसमें भी सुपात्र का मिलना दुर्लभ है।

7. गोदान प्राप्त करने के पात्र का चयन: गोदान किसी ऐसे ब्राह्मण को करना चाहिए जो सदाचारी, वेदपाठी, गृहस्थ हो और जिसका परिवार हो। जिसको गाय की आवश्यकता हो तथा जो गाय की सेवा कर सके। अंगहीन, पापी, लाभी या जो ब्राह्मण स्वयं यज्ञ कर्म न करता हो, उसे दान देना निषेध है।

अगर गोशाला को गोमाता का दान कर रहे हैं तो यह देखना चाहिये कि वहाँ गोमाता की अच्छी सेवा हो पायेगी या नहीं।

8. गोदान के महत्वपूर्ण नियम अधिकार: शास्त्रों के अनुसार, जिस व्यक्ति के पास कम से कम 10 गायें हों, वही एक गाय का दान करने का पूर्ण अधिकारी है। यदि आपके पास गायें नहीं हैं, तो

किसी गौशाला में 10 गायें गोद लेकर भी यह पुण्य अर्जित किया जा सकता है। गोशाला की 10 गाएं गोद लेकर उसमें से एक तो दान कर दीजिये और फिर 10 गायों की आजीवन सेवा करनी है।

9. गोदान के नियम और संयम

गोदान करने वाले को गोदान करके तीन रात तक केवल गाय का दूध पीकर या गोबर-पंचगव्य का सेवन करके संयमपूर्वक रहकर व्रत करना चाहिए।

गोदान से पूर्व की रात गाय के पास ही गौशाला में सोने का विधान भी कुछ स्थानों पर वर्णित है, जिससे दाता और गाय के बीच सात्विक संबंध स्थापित हो सके।

गोदान करते समय यह श्लोक बोलना चाहिए गौवें मेरे आगे हों, गौवें मेरे पीछे हों, गौवें मेरे हृदय में हों और मैं गौओं के मध्य निवास करूँ।

10. शुभ समय- गोदान के लिए मकर संक्रांति, अक्षय तृतीया, एकादशी, पूर्णिमा, ग्रहण काल, गोपाष्टमी या पितृपक्ष को अत्यंत शुभ माना गया है

11. गोदान का आध्यात्मिक महत्व : मान्यता है कि विधिपूर्वक किया गया गोदान मृत्यु के बाद वैतरणी नदी को सुगमता से पार करने में सहायक होता है।यह सात पीढ़ियों के पूर्वजों और सात पीढ़ियों के वंशजों को सद्गति प्रदान करता है। पितरों की शांति और अपने कल्याण के लिये भी गोदान किया जा सकता है।

12.दान के समय इस मंत्र या भाव का स्मरण किया जाता है कि गायें हमारे जीवन के हर पक्ष में शुभता लाती हैं।

घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यौ घृतोद्भवाः।
घृतनद्यो घृतार्ताश्च ता मे सन्तु गृहे सदा।।

अर्थः घी और दूध देने वाली, घी की उत्पत्ति का स्थान, घी को प्रकट करने वाली, घी की नदियाँ बहाने वाली और घी से तृप्त रहने वाली गौएँ मेरे घर में सदा निवास करें।

13. दान के समय प्रार्थना (मंत्र)

जब दाता ब्राह्मण को गाय सौंपता है, तब वह इस श्लोक का उच्चारण किया जाना चाहिये।

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।

अर्थः गौवें मेरे आगे रहें, गौवें मेरे पीछे रहें, गौवें मेरे हृदय (मन) में रहें और मैं सदा गौओं के बीच में निवास करूँ।

14. पापों से मुक्ति का श्लोक - ऋषि वशिष्ठ के अनुसार गोदान व्यक्ति के पुराने पापों को उसी तरह जला देता है जैसे अग्नि ईंधन को जलाती है।

यथा ह्यग्निः सुसमिद्धो धमत्येनं तथा गवि।
प्रदत्तायां दहति वै सर्वपापं द्विजोत्तम।।

अर्थः जैसे प्रज्वलित अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है, वैसे ही विधिपूर्वक दान की गई गाय दाता के समस्त पापों को जलाकर राख कर देती है।

15. स्वर्ण-श्रृंग और रौप्य-खुर (विधि सूचक श्लोक) : महाभारत में बताया गया है कि गाय को किस अवस्था में दान करना श्रेष्ठ है।

कांस्यपात्रोपदोहां च रौप्यखुरीं सुवर्णशृङ्गीम्।
दत्त्वा गां सुव्रत विप्राय वैवस्वतभयात् प्रमुच्यते।।

अर्थः जो व्यक्ति सोने से मढ़े हुए सींगों वाली, चांदी से मढ़े हुए खुरों वाली और कांसे के दोहन पात्र (बाल्टी) के साथ गाय का दान करता है, वह यमराज के भय से मुक्त हो जाता है।

16. अक्षय पुण्य की प्राप्ति - गाय के शरीर पर जितने रोम (बाल) होते हैं, उतने वर्षो तक पुण्य का फल मिलता है।

यावन्ति रोमाणि भवन्ति धेन्वास्तावद्वर्षाणि महीयते स्वर्गलोके।

अर्थः गाय के शरीर पर जितने बाल होते हैं, उतने ही हजार वर्षो तक गोदान करने वाला व्यक्ति स्वर्गलोक में आनंद प्राप्त करता है।

वर्तमान परिस्थिति में गोग्रास देना भी गोदान ही है।

सनातन धर्म

(अम्बा लाल सुथार सम्पादक)

धर्म क्या है? धर्म शब्द संस्कृत की 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'धारण करना' या 'जो धारण किया जाए'। धर्म एक व्यापक अवधारणा है जो कर्तव्यों, नैतिक आचरण, सद्गुणों और जीवन जीने के उस तरीके से जुड़ा है जिसके अनुसार जीने से व्यक्ति और समाज का उत्थान होता है, जिसमें सत्य, अहिंसा, न्याय और सभी प्राणियों का कल्याण शामिल है और यह केवल किसी पंथ या रस्म तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के हर पहलू में मनुष्य के सही आचरण का नाम धर्म है।

धर्म ईश्वर के नियम-कानून है, ईश्वर द्वारा बनाया हुआ संविधान है, जिसका पालन करने से मानव संसार में सबके लिये उपयोगी होते हुए, सबके साथ प्रेमपूर्वक रहते हुए ईश्वर का प्रिय बनकर सदा उनसे प्रेम करता रहे और अंत में पुनः ईश्वर में विलीन हो जाय।

धर्म की आवश्यकता क्या है? भगवान का अकेले में मन नहीं लगा तो प्रेमलीला के लिये, अपने साथ खेलने के लिये मानव को बनाया। इस मानव को शरीर दिया और खेल में स्वतंत्र निर्णय के लिये साथ में समझ (विवेक) दी। अपने साथ प्रेमलीला करने के लिये मानव को प्रभु में अहंता (मैं प्रभु का ही अंश हूँ)-ममता (प्रभु ही केवल मेरे हैं) करनी थी लेकिन जीव से भूल हो गई और उसने शरीर में अहंता (यह शरीर मैं हूँ) और ममता (यह शरीर मेरा है) कर दी। जिससे वह प्रभु से प्रेम करने की बजाय अपने शरीर से और शरीर से संबंध रखनी वाली वस्तुओं और व्यक्तियों से प्रेम करने लगा जिससे वह संसार की मोहमाया में फंसकर रह गया। परिणामस्वरूप वह जन्म-मरण के चक्कर में पड़ गया। इस जन्म-मरण के चक्कर से बाहर कैसे निकले, इसका सही मार्ग बताने का नाम धर्म है। धर्म एक विधि है जिसके अनुसार चलने से मानव संसार में सभी को सुख प्रदान करते हुए ईश्वर का प्रेमी बन सकता है।

धर्म के विभिन्न पहलू- इसके अंतर्गत वे सब क्षेत्रं आते हैं जहाँ मानव संसार से जुड़ा हुआ है और वहाँ उसके व्यवहार करने के क्या नियम कायदे हैं जिसका उसे पालन करना है।

नैतिक और कर्तव्यपरक: यह कर्तव्य (जैसे माँ, पिता, पुत्र के कर्तव्य), नैतिकता (सत्य, अहिंसा), और सदाचार (क्षमा, तपस्या, त्याग) का पालन करना है।

सार्वभौमिक और व्यक्तिगत: यह सार्वभौमिक चेतना और मानवीय गुणों का विकास है, जो व्यक्ति को उसके जीवन में सही दिशा दिखाता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक: यह एक सामाजिक ढांचा भी है जिसमें मान्यताएं, विश्व दृष्टिकोण और प्रथाएं शामिल होती हैं, जो लोगों को जोड़ती हैं।

आध्यात्मिक: यह प्रभु से जुड़ने का एक अलौकिक और दिव्य मार्ग है, लेकिन यह केवल पूजा-पाठ या मंदिर जाने तक सीमित नहीं है। यह भीतर की गहराइयों तक जाता है।

सत्य और न्याय: सभी प्राणियों के प्रति प्रेम, दया, और न्याय का भाव रखना।

मानवता: धर्म का मूल मानवता है; अच्छे इंसान बनना, जिससे अच्छे हिंदू, ईसाई, मुसलमान आदि स्वाभाविक रूप से बन जाते हैं।

आंतरिक शुद्धि: पूजा-उपासना का उद्देश्य मन को शुद्ध करना है ताकि सही-गलत का भेद कर सकें और दूसरों का भला सोच सकें।

आचरण: यह एक आदर्श जीवन-शैली है, जो हर समय, हर स्थिति में सही व्यवहार करने की पद्धति है, न कि केवल बाहरी अनुष्ठान।

संक्षेप में, धर्म वह है जो हमें धारण करना

चाहिए ताकि हमारा जीवन सार्थक हो, हम स्वयं का और दूसरों का भला कर सकें और सृष्टि के नियमों के अनुसार जीवन जीकर प्रभु के प्रेमी बन सके। ईश्वर अनादि और सनातन है, इसलिये उसका विधान धर्म भी अनादि और सनातन है। इसी कारण धर्म को सनातन धर्म कह गया है। कालानतर में सनातन धर्म को ही हिन्दू धर्म कहने लगे। हिन्दू धर्म कुछ और नहीं, ईश्वर का बनाया हुआ सार्वभौमिक विधान ही हिन्दू धर्म है और अपने आप में परिपूर्ण धर्म है।

हिन्दू धर्म किसी मानव द्वारा निर्मित नहीं है जबकि संसार में अन्य नामों से कई धर्म माने जा रहे हैं वे वास्तव में धर्म नहीं, बल्कि विचारधाराएं हैं, पंथ हैं, सम्प्रदाय हैं। ये सब विचारधाराएं किसी न किसी व्यक्ति की विचारधाराएं हैं और सार्वभौमिक नहीं हैं। जब कोई व्यक्ति अपने अनुयायियों को ईश्वर पूजा की बजाय व्यक्ति पूजा में लगाता है या जब धर्म के भीतर कुछ लोग मुख्य सिद्धातों की व्याख्या अलग तरीके से करने लगते हैं तो एक नया वैचारिक समूह बनता है। इसे पंथ या सम्प्रदाय कहते हैं लेकिन आजकल लोग ऐसे अलग-अलग सम्प्रदायों को धर्म कहने लगे।

धर्म का अंतिम लक्ष्य भगवत प्रेम की प्राप्ति होना चाहिये। इससे छोटा लक्ष्य हो तो कम से कम मोक्ष तो होना ही चाहिये। हिन्दू धर्म में समस्त व्यवस्थाएं शास्त्र आधारित हैं जिनके अनुसार जीवन जीने से मानव अपने अंतिम लक्ष्य भगवतप्रेम को प्राप्त कर लेता है। हमारे पूर्वजों ने, ऋषि मुनियों ने जीवन जीने की ऐसी पद्धति पर चलकर देखा और जीवन के सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य को प्राप्त भी किया।

वर्तमान में हिन्दू धर्म के नाम का खूब हल्ला मचाया जा रहा है, लेकिन उसका पालन करने वाले कितने लोग हैं? इसलिये हमारे धर्म का सबको पूरा ज्ञान होना चाहिये। हिन्दू धर्म तो इतना विराट है कि उसका पूरा वर्णन तो कोई महापुरुष ही कर सकते हैं, मेरा कोई सामर्थ्य नहीं। हमने जितना पढ़ा, सुना और समझा है उस अनुसार सार रूप में कुछ बिन्दु दिये जा रहे हैं, आशा है जिज्ञासु भाई-बहन, माताएं पढ़कर इसका लाभ उठायेंगे:-

(1) **ईश्वरवाद**- हिंदू धर्म में ईश्वरवाद एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और यही हिंदू धर्म का मूल है। ईश्वर है इसका विश्वास और उसमें पक्की श्रद्धा ही ईश्वरवाद कहलाता है। हालांकि संसार के अधिकतर धर्म, पंथ, संप्रदाय ईश्वर को मानते हैं लेकिन जब उनके धर्म, सम्प्रदाय के अलावा अन्य धर्म संप्रदाय के द्वारा माने जाने वाले ईश्वर की बात आती है तो वे उसे मानने को तैयार नहीं बल्कि उसका अपमान, तिरस्कार करते हैं। सनातन धर्म में ऐसी बात नहीं है।

हिन्दू धर्म का मूल मंत्र है वासुदेव सर्वम् अर्थात् सब कुछ भगवान ही है तो फिर अन्य की बात ही कहाँ। जिस प्रकार पानी को जल, वाटर, नीर, बर्फ, भाप आदि अनेक नामों और रूपों से पुकारने पर भी वस्तुतः वह मूल में एक ही वस्तु पानी है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर को भी राम, कृष्ण, हरि, अल्लाह, गोड, प्रभु, परमात्मा, सगुण, निगुण, साकार, निराकार आदि किसी भी नाम रूप से पुकारा जाए मगर वह तो एक ही है, एक ही था और एक ही रहेगा।

हिंदू धर्म के सभी व्यवहार इस बात को लेकर होते हैं कि ईश्वर है तथा सबका संचालक वही है। सभी विधान उसी के द्वारा बनाए हुए हैं। वह हमारी प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्माति-सूक्ष्म रूप से ध्यान रखता है तथा यह संसार उसी का रचा हुआ है, उसी के लिए है। जीव तो उसका खिलौना मात्र है। वही सबका मालिक है। उससे बड़ा कोई नहीं, वही सर्वशक्तिमान होते हुए भी परम दयालु तथा सबका प्रेमी है। ऐसा मानने के बाद संसार में कोई भी निषिद्ध आचरण करने को तथा दूसरों का बुरा करने को स्थान ही कहाँ रह जाता है। अतः हमें ईश्वर है ऐसी पक्की श्रद्धा रखते हुए उनकी प्रसन्नता के लिये ही प्रत्येक क्रिया करनी चाहिये।

....शेष अगले अंक में

गोमय (गाय का गोबर)

गाय का गोबरः धरती का वास्तविक आहार और जैविक संजीवनी

(अम्बा लाल सुथार सम्पादक)

गाय का गोबर केवल मानव के लिये एक पवित्र पदार्थ नहीं है, बल्कि यह धरती का आहार है। गोबर का वास्तविक उपयोग तो जिसका आहार है उसे प्रदान करना ही है। लेकिन किसानों ने रासायनिक खादों को गोबर का विकल्प बनाकर गोबर को त्याग दिया ताकि उन्हें घर में गोवंश रखना न पड़े। किसानों के घरों से गोवंश सड़कों पर और गोशालाओं में आ गया। गोशालाओं को गोबर बेचकर गाय को चारा देना है। जब किसान द्वारा गोबर की जगह डी.ए.पी., यूरिया काम ली जा रही है तो गोशालाओं को गोबर के खाद के रूप में सही दाम नहीं मिल रहे हैं, या ग्राहक ही नहीं मिल रहे हैं तो उसे गोबर को औने-पौने दामों में बेचना पड़ता है। दूसरी तरफ गोशालाओं से और गोसेवा से आजकल कई सरकारी विभाग, नौसिखिये और अनुभवहीन लोग भी जुड़ गये हैं जिनको कृषि का वास्तविक ज्ञान नहीं होने से वे गाय के गोबर के अनेकों प्रकार के छोटे-छोटे उत्पाद बनाकर उन्हें बेचकर गोशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयोग कर रहे हैं।

आज के आधुनिक युग में हमने गोबर को औद्योगिक कार्यो में लगाकर या ईंधन के रूप में जलाकर उसके वास्तविक मूल्य को भुला दिया है। जब हम गोबर जलाते हैं, तो हम केवल एक उपला नहीं जलाते, बल्कि उस पोषण को जला देते हैं जो मिट्टी को जीवित रखने के लिए अनिवार्य था।

गोबर धरती का आहारः क्यों और कैसे? - मिट्टी एक जीवित इकाई है। इसमें अरबों सूक्ष्मजीव होते हैं जो फसलों को और पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग ने इन सूक्ष्मजीवों को नष्ट कर दिया है, जिससे धरती बंजर हो रही है। गाय का गोबर इन सूक्ष्मजीवों का मुख्य भोजन है। इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं। जब हम गोबर को खाद के रूप में धरती को समर्पित करते हैं, तो हम वास्तव में धरती माता को उसका वास्तविक आहार और उसका खोया हुआ स्वास्थ्य लौटा रहे होते हैं।

ताजे गोबर को सीधे खाद के रूप में इस्तेमाल न करने के मुख्य कारण- ताजे गोबर के सड़ने की प्रक्रिया में बहुत अधिक ऊष्मा पैदा होती है। अगर इसे सीधे पौधों की जड़ों में डाल दिया जाए, तो यह जड़ों को जला सकता है। इसमें अमोनिया गैस का स्तर बहुत अधिक होता है, जो पौधों के लिए हानिकारक हो सकता है और उनकी वृद्धि रोक सकता है। साथ ही ताजे गोबर में कई तरह के हानिकारक बैक्टीरिया, परजीवी और फंगस होते हैं। साथ ही, इसमें घास-फूस के बीज भी हो सकते हैं, जो आपके खेत या बगीचे में अनचाहे खरपतवार उगा सकते हैं। ताजे गोबर में बहुत जल्दी दीमक लग जाती है जो फसलों को चौपट कर सकती है। जब ताजा गोबर जमीन में सड़ना शुरू करता है, तो इसे तोड़ने वाले सूक्ष्मजीव मिट्टी की उपलब्ध नाइट्रोजन का उपयोग अपने भोजन के रूप में कर लेते हैं। इससे पौधों को अस्थायी रूप से नाइट्रोजन की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इसीलिए, गोबर को 3-6 महीने तक अच्छी तरह से सड़ाकर ही खाद के रूप में उपयोग करना सबसे सुरक्षित और फायदेमंद माना जाता है।

गोबर खाद के विभिन्न प्रकार और उनका महत्व :-

मिट्टी की आवश्यकता और फसलों के प्रकार के अनुसार गोबर को विभिन्न स्वरूपों में धरती के आहार के रूप में परोसा जा सकता है।

1. गोबर की सड़ी हुई खाद- यह सबसे सरल, सबसे पुरानी और प्रभावी विधि है। गोबर और गोमूत्र को एक गड्ढे में एकत्र कर उसे पूरी तरह अपघटित होने दिया जाता है। कई महीनों में तैयार यह काली, गंधहीन खाद मिट्टी की संरचना को सुधारती है और रेतीली मिट्टी में पानी रोकने की क्षमता बढ़ाती है।

2. वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ खाद)-जब गोबर को केंचुओं के माध्यम से परिवर्तित किया जाता है, तो यह मिट्टी का अमृत बन जाता है। गोबर की लम्बी पाली बनाकर उसे कुछ दिन तक ठण्डा कर उसमें केंचुए प्रवेश कराये जाते हैं। केंचुए गोबर को खाकर उसे अत्यधिक उपजाऊ दानों में बदल देते हैं। इसमें साधारण खाद की तुलना में 5 गुना अधिक नाइट्रोजन और 8 गुना अधिक फास्फोरस होता है। यह पौधों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

3. जीवामृत-प्राकृतिक खेती का आधार जीवामृत है। ताजे गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन और खेत की मेढ़ की मिट्टी या बरगद के नीचे की मिट्टी के घोल से तैयार यह तरल खाद एक माइक्रोबियल कल्चर है। यह मिट्टी में सोए हुए सूक्ष्मजीवों को जगाता है और उनकी संख्या में करोड़ों गुना वृद्धि करता है। यह खाद नहीं, बल्कि मिट्टी के लिए एक टॉनिक की तरह कार्य करता है।

4. घनजीवामृत-जीवामृत के घोल को सुखाकर तैयार किया गया यह स्वरूप उन क्षेत्रों के लिए वरदान है जहाँ पानी की कमी है। इसे बुवाई के समय मिट्टी में मिलाया जाता है, जो लंबे समय तक मिट्टी को पोषित करता रहता है।

5. बायोगैस स्लरी- बायोगैस संयंत्र से निकलने वाला तरल गोबर (स्लरी) खाद का सबसे शुद्ध रूप है। इसमें से हानिकारक गैसें निकल चुकी होती हैं और पोषक तत्व सीधे पौधों को उपलब्ध होने वाली अवस्था में होते हैं। यह खरपतवार से मुक्त होती है और तुरंत असर दिखाती है।

6. प्रोम खाद (फास्फेट रिच ऑर्गेनिक मैन्योर)- प्रोम खाद को हरित क्रांति का जैविक विकल्प माना जाता है। यह गाय के गोबर और रॉक फास्फेट (खनिज) के बारीक मिश्रण से तैयार की जाती है। साधारण रासायनिक खाद (जैसे डी.ए.पी.) मिट्टी को सख्त और अम्लीय बना देती है, जबकि प्रोम खाद मिट्टी की जैविक शक्ति को बढ़ाती है। इसमें मौजूद सूक्ष्मजीव रॉक फास्फेट को धीरे-धीरे घोलकर पौधों को उनकी आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराते रहते हैं। यह मिट्टी के पी.एच. मान को संतुलित करती है। यह पौधों की जड़ों के विकास और फूलों-फलों की गुणवत्ता में जबरदस्त सुधार करती है। यह लंबे समय तक मिट्टी में फास्फोरस की उपलब्धता बनाए रखती है, जिससे अगली फसलों को भी लाभ मिलता है।

आज रासायनिक खादों के अत्यधिक प्रयोग से धरती बंजर हो चुकी है। रासायनिक खादों से अन्न और जल जहरीला हो चुका है परिणामस्वरूप मानव केसर जैसे अनेकों घातक रोगों से ग्रसित हो चुका है और उसका मन मस्तिष्क विकृत हो चुका है। गोबर को कण्डों के रूप में जलाने से भी खाद का भारी नुकसान हो रहा है। इसलिये गाय के गोबर को खाद बनाकर खेतों में डालते हैं, तो हम केवल फसल ही नहीं उगाते हैं, बल्कि हम अपनी धरती माँ का कर्ज उतारते हैं और आने वाली पीढ़ी को जीवन देते हैं।

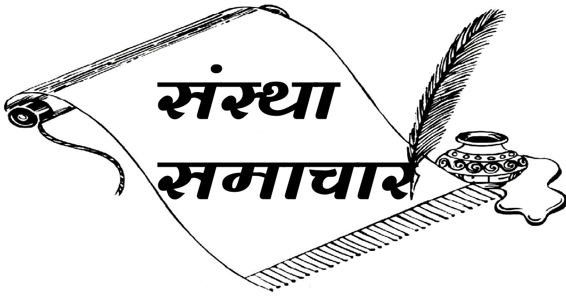

सूरत में संगीतमय सुंदरकांड का हुआ भव्य आयोजन, हजारों श्रद्धालुओं ने लिया भाग

सूरत : विश्व की सबसे बड़ी गोसेवी संस्था श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की पावन प्रेरणा से पथमेड़ा की सूरत शाखा द्वारा शहर में गोसेवा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से शुक्रवार, 10 अप्रैल 2026 को एक भव्य और दिव्य धार्मिक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में प्रसिद्ध सुंदरकांड प्रवाहक श्री अजय जी याग्निक के मुखारविंद से संगीतमय सुंदरकांड का वाचन हुआ, जिसका हजारों श्रद्धालु भक्तों ने साथ में गाकर और श्रवण कर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। आयोजन का शुक्रवार सायं 5 बजे से सिटीलाइट स्थित पंचवटी हॉल, महाराजा अग्रसेन पैलेस में शुभारंभ हुआ, जो देर रात तक चला।

इस दिव्य अवसर पर सुंदरकांड की चौपाइयों के माध्यम से उपस्थित श्रद्धालुओं को रामभक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिकता का विशेष अनुभव हुआ। पूरा वातावरण रामभक्ति से सराबोर नजर आया।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के सीईओ आलोक सिंहल ने जानकारी देते हुए बताया कि सूरत के बड़ी संख्या में गोभक्तों, गोसेवकों और मानस प्रेमियों ने सपरिवार कार्यक्रम में भाग लेकर धर्मलाभ अर्जित किया। उन्होंने सभी उपस्थित श्रद्धालुओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह आयोजन गोसेवा के महत्व को जनमानस तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ। इस अवसर पर सैंकड़ों की संख्या में गोभक्त कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा उत्पादित की जा रही है विभिन्न जैविक खादें

पथमेड़ा: परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री की पावन प्रेरणा से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा बायोगैस प्लांट से निकलने वाली स्लरी से विभिन्न प्रकार की खादों का वाणिज्यक स्तर पर निर्माण आरम्भ कर दिया है। खाद निर्माण का यह प्रकल्प पथमेड़ा के निकट वैदिक गो उत्पाद फाउडेशन की पथमेड़ा डेयरी के समीप बड़सम में है। इसका सेवा कार्य पूज्य संत श्री नर्मदाशरणजी महाराज संभाल रहे हैं।

वर्तमान में इस प्रकल्प में मुख्य रूप से निम्न खादें तैयार की जा रही है-

1. प्रोम खाद- भारतवर्ष में बनने वाली प्रोम खादों में सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि संस्था की गोमाता के पवित्र गोमय से बनाई जाती है। गोबर गैस पलांट की स्लरी को सुखाकर उसमें रॉक फास्फेट मिलाकर बनती हैं
2. किण्वित जैविक खाद- गोबर गैस पलांट की स्लरी को सुखाकर बनाई जाती है जो सस्ती तथा खरपतवार रहित है। अधिक जानकारी और व्यापारिक पूछताछ हेतु 90237 80142 पर सम्पर्क करें।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

वैदिक नारी संजीवनी

वैदिक नारी संजीवनी महिलाओं के स्वास्थ्य के लिये एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक हर्बल टॉनिक है जो मुख्य रूप से महिलाओं में हार्मोनल संतुलन बनाने और स्त्री रोगों एवं मासिक धर्म से संबंधित सभी बीमारियों को ठीक करने में मदद करता है। मासिक धर्म संबंधी विकारों जैसे रक्त और सफेद निर्वहन, अनियमित चक्र, पेट के निचले हिस्से और पीठ दर्द के लिए आदि में वैदिक नारी संजीवनी सिरप का दैनिक उपयोग करने से राहत मिलती है। वैदिक नारी संजीवनी गर्भाशय से संबंधित रोगों के उपचार में भी मदद करती है। यह प्राकृतिक उपचार हार्मोन को विनियमित करने की अनुमति देता है और यौन अंगों के नियमित कामकाज की सुविधा प्रदान करता है। यह एक अद्भुत हर्बल औषधि है जो थकावट, सिरदर्द, मिजाज और बेचैनी से भी राहत दिलाती है।

कब इस्तेमाल करें:

विशेष रूप से महिलाएं इसका उपयोग तब कर सकती हैं जब उनके पीरियड्स के दौरान दर्द, पेट के निचले हिस्से और पीठ में दर्द हो। रक्तचाप और प्रदर को नियंत्रित करने में भी सहायक है।

लाभ:

यह रक्तचाप, प्रदर, मासिक धर्म के दौरान दर्द, उनके श्रोणि और पीठ के क्षेत्र में दर्द जैसी समस्याओं से पीड़ित महिलाओं को राहत देता है।

कितनी मात्रा में और कब लें:

हर सुबह और शाम भूखे पेट 2 चम्मच पानी के साथ मिलाकर या चिकित्सक के निर्देशानुसार लें।

कुल पृष्ठ–36
मई 2026

प्रकाशन तिथी : 01 मई 2026
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No: RJ/SRO/9681/2025-2027

श्रद्धानुसार गोसेवार्थ सहयोग अवश्य करें।

1. एक गोमाता की सेवार्थ गोग्रास राशि प्रतिवर्ष –	रु. 21,000/–
2. हरा घास – चारा की एक गाड़ी –	रु. 31,000/–
3. सूखे घास की एक गाड़ी –	रु. 101,000/–
4. अक्षय भू–दान प्रति एक बीघा की राशि –	रु. 2,51,000/–
5. जीवन के साथ भी जीवन के बाद भी आजीवन गोपालक बनें प्रति गोवंश –	रु. 2,51,000/–
6. पौष्टिक आहार की एक गाड़ी की राशि –	रु. 5,00,000/–
7. गुड़ की एक गाड़ी की राशि –	रु. 4,51,000/–
8. बीमार गोवंश की दवाईयां प्रतिमाह –	रु.11,00,000/–
9. पथमेड़ा द्वारा सेवित गोवंश के एक दिन का पौष्टिक आहार, हरा एवं सूखा घास चारा –	रु. 51,00,000/–

10. आप अपने निवास अथवा प्रतिठान पर नियमित गोग्रास राशि दानपात्र में अर्पित कर सकते हैं।

SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
A/C: 08490100023827, BANK OF BARODA ASHRAM ROAD AHMEDABAD,
IFSC CODE: BARB0ASHRAM (Fifth character is zero)

7742093179, 7073000151, 9760635735